पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्म लगते असौज तीज सन् 1942 में ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद, जनपद गाजियाबाद (पहले मेरठ) उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री नानक चन्द और माता जी का नाम श्रीमती सोना देवी था। लगभग दो मास की अवस्था में श्वासन में लेटने से ही कुछ समय के उपरान्त शिशु की गर्दन दोनों ओर हिलने लगी और होठ फड़फड़ाने लगे। इस क्रिया की पुनरावृत्ति होने पर अज्ञानतावश उपचार प्रारम्भ हो गया। परन्तु उस विशेष अवस्था में जाने की घटनाएँ बढ़ती रहीं और आयु बढ़ने के साथ-साथ मन्त्र-पाठ और प्रवचन स्पष्ट सुनाई देने लगा। छः वर्ष की आयु में इन्हें भयानक चेचक निकली जो इनके मुख-मण्डल पर अपनी स्मृति छोड़ गई।

सात वर्ष की अल्पायु में ही इनके पिताश्री ने अपने गाँव में ही पशुओं व कृषि के कार्य के लिए नौकर रख दिया। धीरे-धीरे इनके प्रवचनों की क्रिया को मनोरंजन व कौतुक का साधन बनाया जाने लगा। एक दिवस प्रवचन की प्रक्रिया के पश्चात् अत्याधिक पिटाई के कारण लगभग 15 वर्ष की अवस्था में भीषण परिस्थितियों में मध्य रात्रि में गृह को त्यागकर विचरण करते हुए अपनी कर्मभूमि बरनावा जा पहुँचे वहाँ पर आप योग मुद्रा में समाधिस्थ होकर प्रवचन करने लगे, जिसकी सुगन्धी आस-पास में तीव्रता से फैल गई। आपने अपने प्रवचनों के माध्यम से वेद ब्रह्म पारायण यज्ञों का आयोजन करना शुरु कर दिया। जन-समूह के अथाह प्रेम व सहयोग से बरनावा लाक्षागृह पर पाँच यज्ञशालाएँ, महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, आश्रम व गऊशाला की स्थापना की, जिसका प्रबन्ध उनके द्वारा स्थापित श्री गाँधी धाम समिति की देखरेख में होता है।

पूज्यपाद गुरुदेव 28 दिसम्बर 1961 में पहली बार दिल्ली प्रवचन के लिए आए। अथाह ज्ञान के भण्डार, आध्यात्मिक जगत की महान् व अद्‌भुत विभूति के प्रवचन सुनने के पश्चात् प्रवचनों को टेप करने का निर्णय लिया गया और कुछ समय के उपरान्त प्रवचनों को टेप करके प्रकाशित करने के लिए पूज्यपाद गुरुदेव की संरक्षकता में वैदिक अनुसन्धान समिति का दिल्ली में गठन हो गया। जन्म जन्मान्तरों के शृङ्गी ऋषि की पुण्य आत्मा ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज इस अज्ञानता के युग में वैदिक संस्कृति का पुनः से उत्थान करने के लिए जीवनपर्यन्त लगे रहे। ऋषि-मुनियों ने अनुसन्धान के द्वारा भौतिक व आध्यात्मिक विज्ञान को अपने जीवन में कितना साकार किया है उसकी अथाह चरमसीमा इनके प्रवचनों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इस अथाह ज्ञान को मानवता के लिए आचरण व व्यवहार में लाने का सरल व श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शित किया है और साहित्य की गुत्थियाँ स्पष्ट की हैं। जिससे मानव अपना व जनसाधारण का कल्याण करते हुए इस भव सागर से पार हो सकता है।

यह दिव्य आत्मा 15 अक्टूबर 1992 को पचास वर्ष की अवस्था में ब्रह्ममूहुर्त के समय अपने लोकों को गमन कर गई। **–वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! हे मेरे जीवन के संचालक! तू आकर हमें तपस्वी बना। हमें योगी बना। प्रभु! अब मुझे किसी ने संकेत कराया है कि तू तपस्वी बन। हे प्रभु! मेरे जीवन में, मेरे हृदय में जो नाना प्रकार की त्रुटियाँ हैं, उन त्रुटियों को मुझ से दूर करो, मैं त्रुटिदायक नहीं बनना चाहता। प्रभु! मेरा जीवन आपकी कृति में हो, मेरा जो जीवन है, मेरी जो संकलन धारा है, वह आपकी कृति में होनी चाहिए।

सुन्दर यज्ञ करने को देव पूजा कहा जाता है, जिसमें देवताओं का आदर होता है, देवताओं के लिए हवि प्रदान करते हैं। यजमान की अवस्था सौ वर्षों की होनी चाहिए। हे परमात्मन्! आप अधिक से अधिक अवस्था दीजिए, जिससे विधाता! हमारा जीवन संसार में पवित्र बनता जाए और हम अपनी मानसिक इन्द्रियों को सुन्दर करते चले जाएँ। हम परमात्मा की कृति को, हम उस परमात्मा को प्रातः और साँयकाल धन्यवाद करते चले जाएँ, जिससे हृदय में मानसिक बल आता चला जाए और **जिस मानव के हृदय में मानसिक बल होता है वह किसी भी काल में रुग्ण नहीं होता, उसको किसी प्रकार का भी दुःखद नहीं होता।** वह सदैव एक रस बना रहता है। निर्द्वन्द बना रहता है, ब्रह्मचर्यता को ले करके चलता है, अग्नि को ले करके चलता है, प्रकाश को ले करके चलता है और उस प्रकाश में वह प्राणी रहता है, जिसके पश्चात् अन्धकार नष्ट होता चला जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 589 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 664
वर्ष : 50 44 समग्र वर्ष : 57

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. आत्मा को जानने की प्रेरणा	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-21
4. आत्मा का ज्ञान	पूज्यपाद-गुरुदेव	22-31
5. त्री-विद्या	पूज्यपाद-गुरुदेव	32-37
6. ऋषियों के उद्‌गार		38
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		39-42

*श्रावणी पर्व

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की पावमानी प्रेरणा से रक्षाबन्धन के शुभावसर पर दिनाँक 12-8-2022, दिन शुक्रवार को प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा के प्राङ्गण में सामवेद ब्रह्म-पारायण महायज्ञ का आयोजन गाँधी धाम समिति द्वारा आयोजित किया जा रहा है। आप सभी इस यज्ञ में अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

आत्मा को जानने की प्रेरणा

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ ऐसा माना गया है कि **मूल चार वेद माने जाते हैं, परन्तु उन चार मूल वेदों की ग्यारह सौ सत्ताईस शाखाएँ स्वीकार की गई हैं।** इसमें से प्रथम संहिता का नाम पिप्पलाद कहलाया गया है, द्वितीय शाखा का नाम शृङ्गकेतु कहलाया गया है, उससे पूर्व मैं आज शाखाओं का वर्णन नहीं कराने जा रहा हूँ। उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि हमारे यहाँ ग्यारह सौ सत्ताईस शाखाएँ स्वीकार की गई हैं। तो मेरे प्यारे! आज तुम्हें यह जानकर बड़ी महान् प्रसन्नता होगी कि आज का हमारा ऋषिवर जो वेद पाठ था, परन्तु वह **वायु मुनि महाराज के जो मुनिवरो! पैन्तालीसवें प्रपौत्र, महर्षि श्वेतकेतु थे, उस संहिता का पाठ समाप्त होने जा रहा है।** तो मेरे प्यारे! ऋषिवर हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों की परम्परा इनकी प्रणाली, इनकी महती हमारे यहाँ परम्परागतों से प्रदीप्त होती चली आई है, जिसके ऊपर मानव को सदैव विचार-विनिमय करने की आवश्यकता है। हमारा जीवन, हम अपने जीवन को यदि अच्छी प्रकार विचार-विनिमय करेंगे, हमारे जीवन की जो प्रतिभा है, वह जो हमारा प्रत्येक अङ्ग है, वे परमपिता परमात्मा ने, जिसका निर्माण किया है वह प्रत्येक अङ्ग हमारे लिये विचारणीय है। तो हमें विचारना है और परम्परागतों की पवित्र वेदी पर ले जाना है, जिस पवित्र वेदी पर ले जाने के पश्चात् हमारा जीवन, हमारी मानवता वास्तव में पवित्रता को प्राप्त हो जाती है।

अन्तःकरण का प्रकाशक

आज का हमारा वेद पाठ, आज हमारी सुन्दर शाखाएँ, हमें सुन्दर, महान्

उपदेश देती चली जा रही थीं और वेदज्ञ प्रकाश के सम्बन्ध में, विचार-विनिमय होता चला जा रहा था। आज का वेद पाठ कह रहा था, **वेदज्ञ प्रकाश यह जो वेद है, यह अनुपम प्रकाश है, यह महान् प्रकाश है।** तो मेरे प्यारे महानन्द जी यह कहा करते हैं, क्या, जब आज वेद को प्रकाश स्वीकार करते हो, तो तुम भी, सूर्य अनुपम प्रकाश प्रातःकाल से सायंकाल तक उत्पन्न होता रहता है, चन्द्रमा से भी प्रकाश आता रहता है, तारा मण्डलों से भी प्रकाश आता रहता है। तो इसका उत्तर हमने बहुत पूर्व काल में दिया भी था, कि वास्तव में जब हम यह विचारने लगते हैं कि सूर्य को भी वेद ही स्वीकार करें, क्योंकि जब इसको प्रकाश कहते हैं, परम प्रकाश कहा जाता है, तो वेद का आचार्य कहता है, जैसे हमारे नेत्रों का देवता, नेत्रों का प्रकाशक, जिस प्रकार मुनिवरो! यह सूर्य माना गया है, यह नेत्रों को प्रकाशित करता है, इसी प्रकार **मानव के अन्तःकरण को प्रकाशित करने वाला बेटा! यह वेदज्ञ ज्ञान ही होता है।** इसके ऊपर विचार-विनिमय करना है कि हमें अपने अन्तःकरण को प्रकाश में लाना है और ज्ञानरूपी प्रकाश की आवश्यकता है और वह ज्ञान, विज्ञान प्रतिभाशाली उस वैदिक ज्ञान में ओत-प्रोत है।

आओ, मेरे प्यारे! ऋषिवर आज का हमारा वेद पाठ केवल प्रकाश के लिये ही तो पुकार रहा था, परन्तु यह प्रकाश हमें कहाँ ले जाता है, मृत्यु से पार कर देता, हमें मृत्यु से और अक्षीण कर देता है तो मृत्यु हमारे समीप नहीं आती। हमारे यहाँ मृत्यु के सम्बन्ध में नाना प्रकार की विड़म्बना चली आई है। मेरे प्यारे महानन्द जी यह कहा करते हैं, क्या यह संसार, सर्वत्र संसार मृत्यु के मुखारबिन्दु में जा रहा है। यह मृत्यु संसार को अपने में वशीभूत कर लेती है, अपने में धारण कर लेती है और यह मृत्यु मानव मात्र को निगल जाती है। मेरे प्यारे! ऋषिवर यहाँ तक नहीं बेटा! लोक-लोकान्तरों को निगल जाती है, लोक-लोकान्तरों के प्राणियों को निगल जाती है।

ऋषि-मुनियों का मन्थन

यहाँ आचार्यजनों ने ऐसा कहा है कि आज हम उसके ऊपर विचार-विनिमय करने वाले बनें, कि मृत्यु क्या है। मृत्यु के सम्बन्ध में एक वार्त्ता

मुझे स्मरण आती चली आ रही है, बेटा! वास्तव में तो मृत्यु क्या है – सबसे प्रथम आज तक यह कहलाया गया है, जो भी, संसार में मृत्यु ही एक ऐसा शब्द है, जो मानव के लिये बहुत ही आश्चर्यजनक है और विचारता रहता है कि मृत्यु क्या है? तो ऋषि कहते हैं, आचार्य जी ने कहा है, महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज ने एक समय बेटा! महर्षि रेवक के और महर्षि शाण्डिल्य इत्यादि ऋषि-मुनियों का एक समाज एकत्रित हो रहा था, जिसमें बेटा! महर्षि भृगु और महर्षि शाण्डिल्य और महर्षि मुदग्ल आदि ऋषियों का आगमन होता चला जा रहा था। परन्तु जब महर्षि पिप्पलाद मुनि का सभा में आगमन हुआ, तो वहाँ ब्रह्म विचार-विनिमय हो रहा था, क्या ब्रह्म क्या है तो इसके सम्बन्ध में बहुत ही सुन्दर-सुन्दर विचार-विनिमय कर रहे थे कि आत्मा क्या है। उसके पश्चात् जब महर्षि पिप्पलाद मुनि ने अपने आश्रम को आगमन किया।

मानव शरीर

मुनिवरो! देखो, उनका पुत्र था, केवल सात वर्ष उसकी मृत्यु हो गई थी। परन्तु जब वह अपने गृह में आये, पत्नी जी को जब दृष्टिपात किया, तो वह व्याकुल हो रही थी और व्याकुल होते हुए उसने कहा कि मेरे पुत्र की मृत्यु हो गई। महर्षि पिप्पलाद जी ने कहा देवी! संसार में मृत्यु कोई शब्द नहीं होता। उन्होंने कहा कि महाराज यह आप क्या उच्चारण कर रहे हैं? मृत्यु शब्द क्यों नहीं होता? मुझे तो मृत्यु प्रतीत होती है, मेरा पुत्र मेरे समीप नहीं रहा है। आज मैं अपने पुत्र को कहाँ से ला सकती हूँ? परन्तु जब, यह दोनों मृत्यु के ऊपर प्रश्न होने लगे, तो महर्षि पिप्पलाद जी ने कहा क्या, हे देवी! इसलिए मृत्यु कोई शब्द नहीं होती, क्योंकि **संसार में कोई वस्तु नष्ट नहीं होती,** प्रत्येक वस्तु अमिट मानी गई है, इसलिए मैं इसको स्वीकार नहीं करता हूँ। तो देवी ने कहा तो महाराज! मैं आप से यह जानना चाहती हूँ, क्या, यह जो मेरा शरीर आपको प्रतीत हो रहा है, यह शरीर, जब मैं इस रूप में नहीं थी, तो इससे पूर्व यह शरीर कहाँ रहता था? यह शरीर जब तुम्हारा इतना स्थूल रूप में नहीं था, उन्होंने कहा देवी, यह बाल्यकाल में था। बाल्यावस्था में क्रीड़ा कर रहा था। आनन्दपूर्वक

अपनी माता की लोरियों में आनन्द को प्राप्त कर रहा था। ऋषि पत्नी ने कहा कि महाराज! जब यह देखो, जब मैं क्रीड़ा भी नहीं करती थी, उससे पूर्व यह शरीर कहाँ रहता था? उन्होंने कहा कि यह माता के गर्भस्थल में क्रीड़ा कर रहा था और माता की लोरियों के द्वारा नाना प्रकार की नस नाड़ियों का जो समूह माना गया है, उनके द्वारा सुन्दर-सुन्दर रसस्वादन कर रहा था और उसी के द्वारा अपने जीवन की प्रतिभा को पाता चला जा रहा था। आज अव्रति देवी ने, ऋषि पत्नी ने कहा कि महाराज! जब माता के गर्भस्थल में भी गर्भाशय नहीं था, मानो देखो, माता के गर्भ में जब परमाणुवाद नहीं था, तो उससे पूर्व कहाँ रहते थे? तो ऋषि ने कहा देवी! उस समय माता और पिता के रज वीर्य के रूप में ये परमाणु सुगठित हो रहे थे और उस समय प्रतिभा देखो, माता-पिता के शरीर में ओत-प्रोत हो रही थी तेज बन करके, सोम बन करके, क्योंकि सोमावृत्ति सोमा व्रताम अप्रते सोमा देखो, यह संसार सब सोम ही है, क्योंकि देखो, इसमें, क्योंकि इतनी सौम्यवादिता माता-पिताओं में होती है, इतनी उनकी प्रतिभा पवित्र कहलायी गई है। उन्होंने कहा कि महाराज! जब माता-पिता के शरीर में रज वीर्य सोम बन करके नहीं रहते थे, उससे पूर्व यह कहाँ रहते थे? तो ऋषि पत्नी के वाक्यों को पान करने वाले ऋषि ने कहा देवी! उस समय यही परमाणु कुछ अन्न में विराजमान थे और कुछ नाना प्रकार की वनस्पतियों में विराजमान हो रहे थे। उन्होंने कहा बहुत सुन्दर महाराज! परन्तु जब यह अन्न और वनस्पति नहीं थी, तो उससे पूर्व यह परमाणु कहाँ रहते थे? उन्होंने कहा हे देवी! जब मानो देखो, अन्न भी नहीं था और वनस्पति भी नहीं थी, उस समय यह कृषक की भूमि में ललाहित हो रहे थे। कृषक की भूमि में ललाहित हो रहे, उस समय यह कृषक की भूमि में आनन्दत्व मनाते चले जा रहे थे। ऋषि पत्नी ने कहा कि महाराज! जब यह परमाणु मानो देखो, जब यह कृषक की भूमि भी नहीं थी, तो पूर्व कहाँ रहते थे परमाणु? उन्होंने कहा देवी जब यह कृषक की भूमि नहीं थी, उससे पूर्व यह परमाणु देखो, पृथ्वी में बिखरे हुए थे, पृथ्वी में बिखरे हुए परमाणु थे। उन्होंने कहा महाराज! क्या यह पृथ्वी के परमाणु स्वीकार किये जायें। उन्होंने कहा कदापि नहीं, देवी! यह कुछ पृथ्वी के परमाणु होते हैं, कुछ जल के

परमाणु होते हैं, कुछ अन्तरिक्ष के परमाणु होते हैं, कुछ मानो यह पञ्च महाभौतिक जो परमाणु हैं, उनकी सुगठितता हो जाती है, और इनके विच्छेद मानो देखो, **इन परमाणुओं को सुगठित करने वाला, इस मानव शरीर में जीवात्मा विराजमान रहता है।** मानो जब यह जीवात्मा इस शरीर में पृथक् हो जाता है। शरीरम् ब्रह्मे अप्रता रुद्रा जब **इस शरीर को यह आत्मा त्याग देता है, तो यह परमाणु अपने-अपने कारण में लय हो जाते हैं।**

हे देवी! आज तुम्हारा पुत्र, परन्तु पुत्र की वेदी क्या है? आज यदि पुत्र की वेदी को स्वीकार किया जाये, कि हम पुत्र किसे कहते हैं? तुमसे तो हे देवी! इनका उत्तर भी नहीं बन पायेगा, मानो इन परमाणुओं को हम पुत्र कहते हैं, मृत्यु कहते हैं, कौन-सी वस्तु मृत्यु को प्राप्त हो गई, परन्तु मानव जो व्याकुल होता है। आज मेरी प्यारी माता! व्याकुल होती है, मानो गुरु और शिष्य दोनों व्याकुल होते हैं, एक-दूसरे का विच्छेदन हो जाने के पश्चात्, यह क्या है, मानो देखो, एक वस्तु हमें प्राप्त होती है, परन्तु वह जो हमारे समीप इस रूप में नहीं रहती, तो प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या, प्रत्येक ऋषि मण्डल को महान् कष्ट होता है। परन्तु यदि यह विचार-विनिमय किया जाये, कि वास्तव में मृत्यु क्या है? तो ऋषि कहते हैं, ऋषि पिप्पलाद जी ने कहा है हे देवी! मृत्यु कोई वस्तु नहीं है, वास्तव में मृत्यु के ऊपर विचार-विनिमय किया जाये, और जब यह तुम्हारे पुत्र के मानो जो पुत्र बना हुआ था, परमाणुओं का जो बना हुआ शरीर था, उसमें से जब आत्मा निकल गया मुनिवरो! देखो, इस मृत्यु के मुखारबिन्दु के मुख में अर्पित कर दिया, अहा! अग्नि के परमाणु अग्नि में मिश्रित हो गये। जल के परमाणु जल में मिश्रित हो गये। पृथ्वी के परमाणु पार्थिव तत्त्व में मिश्रित हो गये, उसी प्रकार मानो अन्तरिक्ष के परमाणु अन्तरिक्ष में चले गये, वह सब मानो अपने-अपने परमाणु अपने ही जहाँ से यह आये थे, उसी दिशा को प्राप्त हो गये।

आत्मा

देखो, आत्मा अपने उस अन्तरिक्ष में भ्रमण करने लगा। यहाँ आत्मा मानो बिना शरीर के, यह बिना शरीर के नहीं रह सकता, यह अपने सूक्ष्म शरीर के

द्वारा अपने शरीर को त्याग करके अन्तरिक्ष में चला जाता है। अन्तरिक्ष में नाना प्रकार की वायु में भ्रमण करता रहता है। जैसा उन्होंने कहा, हे देवी! जैसा देखो वाजश्रवा ने मानो देखो, महर्षि गौतम कुल में उत्पन्न होने वाले और विश्वामित्र ब्रहोवृत्ति मानो देखो, प्राची देखो, भारद्वाज में उत्पन्न होने वाले, और विश्वामित्र बृहे वृत्ति मानो देखो, वाजश्रवा ने और देखो, यहाँ मृत्यु आचार्य ने, यमाचार्य ने मानो देखो, बालक से कहा था, अप्रति रुद्रा मनो सुप्रजा, उन्होंने कहा था हे बालक! आज यह जो शरीर को त्याग करके हे नचिकेता! ब्रह्मचारी, आत्मा चला जाता है, यह अन्तरिक्ष में चला जाता है, परमाणुवाद किसी भी काल में नष्ट नहीं होता, क्योंकि यह प्रकृतिवाद है, इसी को हमारे यहाँ प्रकृतिवाद कहा जाता है। आज हमें आत्मा के लिये, वास्तव में आत्मा के लिये उपासना करनी चाहिये। इन वाक्यों में आत्मा से हमारा कल्याण होता है आत्मा को ही उपास्य देव स्वीकार करते हैं, तो आत्मा से ही तो हमारा उत्थान होता है।

मृत्यु की मीमांसा

महर्षि पिप्पलाद जी ने कहा हे देवी! आज ऋषि-मुनियों के वचन हैं, उनके जो वचनामृत हैं वह सर्वत्र हमें वास्तव में, हमें शिक्षा देते चले आ रहे हैं, क्या आओ, और इसका पान करते चले जाओ। मृत्यु क्या है? वास्तव में मृत्यु कोई वस्तु नहीं है। आज जो मानव व्याकुल होता है, उसके द्वारा कोई किसी प्रकार का स्वार्थवाद होता है, मानो उसकी नाना प्रकार की कुछ भविष्य की विवेचनाएँ होती हैं, परन्तु देखो, उसके कुछ सुखद दुखद होते हैं जिससे मानव इस प्रकार व्याकुल होता रहता है। तो मेरे प्यारे! ऋषिवर आज हमें मृत्यु के वास्तविक स्वरूप को जान लेना चाहिये, वास्तव में मृत्यु किसे कहते हैं। मृत्यु उसी को कहते हैं, क्योंकि उसकी जो अग्रता है, हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने कहा है, क्या मृत्यु किसे कहते हैं? जो मानव संसार में कायर बन करके रहता है, वह सदैव मृत्यु को प्राप्त होता रहता है। अरे! शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नहीं कहलाया जाता है। हमारे यहाँ बेटा! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा है कि शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नहीं है, मृत्यु नाम है उसका, जो संसार में

कायरता से जीवित रहता है। आज कोई मानव, मानव को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता रहता है, मानव, मानव की विड़म्बना में परणित रहता है, नष्ट करने में, परन्तु यह जानों कि वह मानव मृत्यु के मुख में चला जा रहा है। मृत्युवादी वही व्यक्ति होता है, जो धर्म को त्याग करके, अधर्म में उसकी प्रवृत्ति बन जाती है। बेटा! असुर बन जाता है। अहा! असुरता को प्राप्त हो जाता है, वही तो मृत्यु को प्राप्त होता है। अन्यथा संसार में मृत्यु कोई वस्तु नहीं है, क्योंकि यदि हम मृत्यु की मीमांसा करना चाहते हैं, मृत्यु क्या है? मृत्यु कोई वस्तु नहीं है बेटा! क्योंकि आत्मा ही जीवन है।

नेत्रों का देवता

संसार में मुझे एक वार्त्ता और स्मरण होती चली जा रही है बेटा! जो मैंने बहुत पूर्व काल में इनकी विवेचना करते हुए कहा है, आज भी मुझे स्मरण आती चली जा रही है। एक समय बेटा! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज राजा जनक के द्वार पर जा पहुँचे। राजा जनक ने महर्षि जी का बड़ा सुन्दर स्वागत किया, चरणों को स्पर्श करके सुन्दर आसन दिया, आसन पर ही जब विराजमान हो गये, नाना प्रकार के पदार्थों को पान कराने के पश्चात् राजा उनके चरणों में ओत-प्रोत हो गये। राजा ने कहा हे भगवन्! मैं आपसे कुछ प्रश्न करना चाहता हूँ। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले राजन्! कहो तुम्हारा क्या प्रश्न है। उन्होंने कहा प्रभु मेरा सबसे प्रथम यह प्रश्न है कि हमारे जो नेत्र हैं, उनका देवता कौन है, हम किसके प्रकाश से प्रकाशित होते हैं? राजा जनक के वाक्यों को पान करने वाले ऋषि ने कहा हे राजन्! इसको तो प्रत्येक मानव जानता है, प्रत्येक बालक बालिकाएँ जानती हैं, कि हमारे जो नेत्र हैं, वह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हुआ करते हैं, सूर्य हमारे नेत्रों का देवता है। जब सूर्य प्रातःकाल में अपनी नाना प्रकार की कान्तियों से कान्तियों के सङ्ग उदय होता है तो मानव, मानव जागरूक हो जाता है। मेरी प्यारी! माताएँ अपने पुत्रों को जागरूक कर देती हैं, हे बालक! अब प्रकाश सूर्य उदय हो गया है, अब प्रकाश आ गया है, अहा तुम जागरूक हो जाओ। देखो, मुनिवरो! एक मीमांसा हमारे यहाँ महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि

महाराज ने की है। क्या, दिवस केवल सूर्य की आभा और कल्पना करते हैं। हे राजन्! इसलिए हमारे नेत्रों का जो देवता है, वह सूर्य कहलाया जाता है।

चन्द्रमा का प्रकाश

राजा ने कहा, भगवन्! जब यह सूर्य नहीं होता तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशित हुआ करते हैं? उन्होंने कहा हे राजन्! जब यह सूर्य नहीं होता तो हम चन्द्रमा के प्रकाश में अपना कर्त्तव्य करने के लिये तत्पर हो जाते हैं, और वह हमारे नेत्रों का देवता बन जाता है। नाना प्रकार की, नाना प्रकार की कान्तियों से युक्त होता हुआ, चन्द्रमा हमें प्रकाश देने के लिये तत्पर हो जाता है, उस चन्द्रमा को हमारे यहाँ देखो, सोम कहा जाता है। जब देखो, पूर्णिमा का दिवस आता है, उसकी सुन्दर-सुन्दर कान्तियाँ मानो जब समुद्रों में जाती हैं तो सुन्दर जल को अपने में ग्रहण करता हुआ, यह चन्द्रमा सोम कहलाया जाता है। उसी सोम के द्वारा बेटा! यह देखो कृषि करने वाले जो वैश्य होते हैं, मानो उनकी जो पृथ्वी होती है, उसको अमृत प्रदान करने वाला, यह सोम चन्द्रमा ही होता है। माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे प्यारे पुत्र होते हैं, तो एक माता की रसना के निचरले विभाग में सोम नाम की नाड़ी होती है, देखो, वह जो सोम कृति नाम की नाड़ी होती है, वह अमृत को पान करती रहती है, चन्द्रमा से अमृत लेती है, और वही अमृत मानो देखो, माता की लोरियों के द्वार पर होता हुआ और मुनिवरो! आगे चल करके, उसी नाड़ी का पञ्चम रूप बन जाता है। और पञ्चम नाम की नाड़ी माता के गर्भस्थल में बेटा! जब जरायुज होता है, उसकी नाभि से नाड़ियों का सम्बन्ध होता है, नाभि के द्वारा ही, मुनिवरो! देखो, सोममयी अमृत को पान करता रहता है। यहाँ तक वह प्रकाश देता रहता है, तो हे राजन्! जब सूर्य नहीं होता, तो हम चन्द्रमा के प्रकाश में अपना कर्त्तव्य करने में तत्पर हो जाते हैं।

तारा मण्डलों का प्रकाश

राजा ने कहा प्रभु! जब यह चन्द्रमा भी नहीं होता इसके पश्चात् हम इस समय किसके प्रकाश से प्रकाशित किया करते हैं? राजा के वाक्यों का पान करने वाले ऋषि ने कहा है, हे राजन्! जब यह चन्द्रमा भी नहीं होता सूर्य भी

नहीं होता तो हम तारा मण्डलों के प्रकाश से प्रकाशित होने लगते हैं, जैसे तारा मण्डल ही हमारे देवत्त्व कहलाये जाते हैं। नेत्रों के देवता बन जाते हैं, इन्हीं के प्रकाश में कार्य करना प्रारम्भ कर देते हैं, मानो वह तारा मण्डल नाना प्रकार के तारा मण्डल कहलाये गये हैं। हमारे यहाँ आचार्यों ने कहा है, क्या हमारी इस सर्वत्र सृष्टि में बेटा! तीन प्रकार के सौर मण्डल का अधिपति सूर्य कहलाया गया है। द्वितीय सौर मण्डल का अधिपति बेटा! ध्रुव कहलाया गया है। और तृतीय सौर मण्डल का अधिपति जेठाय नक्षत्र कहलाया गया है। परन्तु एक-एक सौर मण्डल के अन्तर्गत नाना मण्डल रहते हैं, नाना लोक-लोकान्तर रहते हैं, हमारे ऋषि-मुनियों ने ऐसा कहा है, बेटा! असंख्य परमपिता परमात्मा की सृष्टि में बेटा! सूर्य कहलाये गये हैं, असंख्य, देखो, जेठाय नक्षत्र हैं, और असंख्य देखो, ध्रुव मण्डल कहलाये गये हैं। हमारे यहाँ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, ऋषि को, राजा को वर्णन कराते हुये, राजा को कहा हे राजन्! मानो हमारे यहाँ जो पृथ्वी मण्डल है, ऐसे-ऐसे तीस लाख पृथ्वियाँ सूर्य मण्डल में समाहित हो जाती हैं और जैसा यह सूर्य मण्डल है, ऐसे-ऐसे, एक सहस्त्र मण्डल देखो, बृहस्पति मण्डल में समाहित हो जाते हैं, और जैसा यह बृहस्पति मण्डल है ऐसे-ऐसे एक सहस्त्र बृहस्पति मण्डल आरुणि मण्डल में समाहित हो जाते हैं, और जैसा यह आरुणि मण्डल है, ऐसे-ऐसे एक सहस्त्र आरुणि मण्डल ध्रुव मण्डल में समाहित हो जाते हैं, और जैसा यह ध्रुव मण्डल है, ऐसे-ऐसे एक सहस्त्र मुनिवरो! जेठाय नक्षत्र में समाहित हो जाते हैं।

विज्ञान और आत्म उत्थान

यह है प्रभु की महिमा, आज मैं प्रभु की अलौकिकता को कहा तक वर्णन करता रहूँगा। बेटा! परमात्मा की सृष्टि में, असंख्य तो चन्द्रमा कहलाये गये हैं, असंख्य मण्डल कहलाये गये हैं, नाना सूर्य देखो, बृहस्पति इत्यादि माने गये हैं। तो मेरे प्यारे! ऋषि मैं इस आज के लोक-लोकान्तरों के विज्ञान में जाना नहीं चाहता, परन्तु देखो, सूर्य मण्डल हमारे यहाँ देखो, एक **अग्ने लोक** कहलाया गया है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने यह वर्णन कराते हुए कहा है कि आज का

संसार तो चन्द्रमा की यात्रा कर रहा है। मैंने बहुत पूर्व काल में उनके शब्दों में कहा है, उनके शब्दों की पुनरुक्ति करते हुए कहा है, बेटा! देखो, चन्द्रमा में जाना कोई सुन्दर नहीं है। परन्तु **आत्मा का जानना संसार में सर्वोपरि उत्तम कहलाया गया है।** क्योंकि संसार में आत्मा का उत्थान होता है, देखो सूर्य, चन्द्र मण्डल में जाने से मानव समाज या राष्ट्रवाद किसी काल में उत्तम नहीं बना करते हैं। वह परम्परागतों से ही, मानो विज्ञान चला आ रहा है, द्वापर के काल में विज्ञान की प्रतिभा कितनी पराकाष्ठा पर थी, बेटा! तुमने दृष्टिपात किया होगा राजा रावण के यहाँ विज्ञान पराकाष्ठा पर था, परन्तु मैं आज इस विज्ञान के युग में नहीं जाना चाहता हूँ। यह विज्ञान क्या कर रहा है, परन्तु यह वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि आज हमें आत्मा का ज्ञान होना चाहिये। आत्मा के लिये हमें विड़म्बना होनी चाहिये क्योंकि **आत्मा से ही मानव का उत्थान होता है।** आज हम भौतिक विज्ञानवेत्ता बनने के लिये तत्पर रहते हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने बेटा! भौतिक विज्ञान के लिये बहुत कुछ विवेचनाएँ की हैं, कि हमें भौतिक वैज्ञानिक बन जाना चाहिये, परन्तु बुद्धि, मेधा के आधार पर एक मानव देखो, मुनिवरो! देखो, नाना प्रकार के परमाणु, तिस्त्रेणु, महातिस्त्रेणु, पञ्चस्त्रेणु, इन नाना प्रकार के परमाणुओं को एकत्रित करता रहता है और वह नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की सीमाएँ, जो उनकी जो सीमा हैं, मानो उनकी जो नाना अकृत रेखाएँ हैं उनके जानने का प्रयास करता रहता है।

मुझे स्मरण आता रहता है, बेटा! द्वापर के काल में जब महाराजा भीम का पुत्र घटोत्कच्छ ने यह विचारा कि मैं मङ्गल और पृथ्वी के मध्य का मार्ग जानना चाहता हूँ। तो मुनिवरो! उन्होंने अच्छी प्रकार जाना। अहा! देखो, **मङ्गल और पृथ्वी के मध्य की जो रेखा है, उसका नाम सोमभान नाम की रेखा कहा गया है।** परन्तु देखो, जो **चन्द्रमा और पृथ्वी के मध्य की रेखा है, उसको सोम कृति नाम की रेखा गया है।** परन्तु आगे मैं नाना प्रकार के यन्त्रालयों में जाना नहीं चाहता, आज मैं इस विज्ञान में जाने के लिये तत्पर हो जाऊँ, परन्तु विचार-विनिमय यह चल रहा था, ऋषि ने कहा हे राजन्! जब चन्द्रमा सूर्य नहीं होता तो हम मानो नाना प्रकार के तारा मण्डलों के प्रकाश से प्रकाशित होने

लगते हैं, जो इतने विशाल लोक-लोकान्तर हैं, जिसमें सहस्त्रों-सहस्त्रों सूर्य समाहित हो जाते हैं और नाना चन्द्र मण्डल समाहित हो जाते हैं। आज हम देखो, उन तारा मण्डलों के प्रकाश से प्रकाशित हो जाते हैं।

शब्द का प्रकाश

मेरे प्यारे! ऋषिवर मैं यह जानना चाहता हूँ राजा ने कहा हे ऋषिवर! जब यह तारा मण्डल भी नहीं होते, तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशित होने लगते हैं? उन्होंने कहा हे राजन्! जब यह मानो तारा मण्डल भी नहीं होते तो हम देखो, शब्द के प्रकाश से प्रकाशित हुआ करते हैं। जब मानो वाक्य आता है, उस वाक्य की ज्योति में ज्योतिवान् हो जाते हैं, क्योंकि नाना प्रकार के जो सौर मण्डल हैं, जो लोक-लोकान्तर कहलाये गये हैं, यह सब अन्तरिक्ष में ही रमण करते रहते हैं। कैसी प्रभु की विचित्रता है, बेटा! कि नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर अन्तरिक्ष में ही रमण करते रहते हैं, परन्तु एक-दूसरे से उनका मिलान नहीं हो पाता, अपने-अपने मार्ग में भ्रमण करते रहते हैं। क्योंकि अपनी परिधि में भ्रमण करते हैं, प्राण और मन के द्वारा उनकी प्रक्रियाएँ प्रारम्भ होती रहती हैं, परन्तु विचार यह है, क्या, वह जो शब्द है – उन दोनों के मध्य में, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों के मध्य में से होता हुआ, शब्द की उत्पत्ति मानी गई है। आज जब हमारा देखो, रसना का, तालु का, दोनों का सम्बन्ध मानो तालु का सम्बन्ध हो जाता है, तो शब्द की रचना हो जाती है। इसी प्रकार ऋषियों ने कहा है, क्या **ऋत और सत के आधार पर मुनिवरो! देखो, शब्द की प्रतिभा उत्पन्न होने लगती है।** उसी शब्द के आधार पर बेटा! देखो, आज मानव कोई वाक्य उच्चारण करने के लिये सदैव तत्पर रहता है।

आओ, मेरे प्यारे! ऋषिवर मैं इस वाक्य को अधिक गम्भीर नहीं बनाने जा रहा हूँ, मैं विज्ञान में नहीं ले जाने जा रहा हूँ। केवल वाक्य यह है क्या उन्होंने प्रमाण देते हुए कहा एक मानव मार्ग में चला जा रहा है परन्तु मार्ग से कुमार्ग पर चल देता है, अन्धकार छाया हुआ है, वह मानव उच्चारण करता है, क्या कुमार्ग में चला जाता है, अरे! है कोई, हमें मार्ग चेताने वाला, उस समय बेटा! एक मानव

जो मार्ग में स्थिर है वह अपने शब्द से उच्चारण करता है आ जाओ, मैं मार्ग में स्थिर हूँ। मुनिवरो! देखो, वह मानव उसी शब्द के प्रकाश से उस मार्ग को प्राप्त कर लेता है। उसी मार्ग में पहुँच जाता है। क्योंकि वह मानो उसका शब्द प्रकाश है और उसी प्रकाश के आधार पर बेटा! वह मार्ग को प्राप्त कर लेता है।

चेतना को जानने की प्रेरणा

राजा ने कहा ऋषि से, हे भगवन्! मैं यह जानना चाहता हूँ क्या, जब यह शब्द भी नहीं होता, अन्तरिक्ष, हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं उस समय जब यह मानो शब्द भी नहीं होता? ऋषि ने कहा हे राजन्! मेरे प्यारे! ऋषिवर लोक-लोकान्तर भी नहीं होते, चन्द्र और सूर्य भी नहीं होता, तो उस समय, हे राजन्! हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशित हुआ करते हैं। यह आत्मा ही ज्योतिवान् है, क्योंकि इस शरीर में जब तक आत्मा है, जब तक मानो संसार के नाना प्रकार के पदार्थों को दृष्टिपात करता रहता है, और मुनिवरो! जब यह आत्मा निकल जाता है, केवल मानव का शव है, अहा! उसमें बेटा! नेत्र भी हैं, अरे! सूर्य भी है, अरे! मानव क्यों नहीं प्रकाशमान हो जाते हैं। मुनिवरो! उस समय चन्द्रमा भी है, कान्ति भी है, अमृत भी है, सोम भी है, परन्तु देखो, उस सोम को क्यों नहीं प्राप्त कर लेते हो। इसी प्रकार बेटा! देखो, दिशाएँ भी हैं, श्रोत्र भी हैं, क्योंकि देखो, शब्दों की रचना भी अन्तरिक्ष में होती है, अरे! क्यों नहीं शब्द को श्रवण कर लेते हो। वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि हमारा जो अन्तरात्मा है, अरे! हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते रहते हैं। इसीलिये ऋषि कहते हैं, क्या, आज मानव को इस आत्मा को जानने का प्रयास करना चाहिये, आत्मा क्या है? मानो जो इस शरीर में भास रहा है, जिसकी **चेतना से हम चेतनित हो रहे हैं, उस चेतना को जानना हमारा परम कर्त्तव्य कहलाया गया है।**

आओ, मेरे प्यारे! ऋषिवर मैं कोई अधिक विवेचना तो देने नहीं आया हूँ, केवल वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा यह है कि हमें संसार में मानो मृत्यु को जानना है, तो देखो, उस आत्मा को जानना है। क्योंकि आत्मा को जानने से मृत्यु तुम्हारे सम्मुख आ करके उच्चारण करने लगेगी, कि मेरा कोई

अस्तित्व नहीं है संसार में। परन्तु यदि मृत्यु कोई वस्तु है, तो मृत्यु वही है, जो मानव धर्म को त्याग करके बेटा! अधर्म में परणित हो जाता है, अमानवता में चला जाता है, वही मानव बेटा! देखो, मृत्यु को सदैव प्राप्त होता रहता है। जैसा यहाँ चाक्राण ने कहा है, जब वह प्रजापति के आश्रम में पहुँचे, तो चाक्राण से कहा था प्रजापति ने, हे चाक्राण! यदि तुम उद्गाता बनना चाहते हो यज्ञशाला में, तो तुम उसी देवता के उद्गाता बनो, जिस देवता को तुम जानते हो, और जिस देवता को तुम नहीं जानते हो, उसका तुमसे प्रश्न किया जायेगा, तो तुम्हारा मस्तिष्क नीचे गिर जायेगा। तो वाक्य क्या है, इसके विषय में हम कुछ नहीं जानते, परन्तु इसकी विवेचना करते हैं, चर्चा करते हैं, तो हमारा मस्तिष्क नीचे आ जाता है। परन्तु मृत्यु क्या है? क्या इसके विषय में हम नहीं जानते हैं। हमारा जो जीवन है वह क्या है, अन्तरात्मा क्या है, नास्तिक क्या है संसार में बेटा! मानव इन वस्तुओं को जानने के लिये आता है। आज मैं यह नहीं उच्चारण करने आया हूँ कि मानव को वैज्ञानिक नहीं बनना चाहिये, आज मानव को नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों को नहीं जानना चाहिये, परन्तु इस अन्तरात्मा को भी जानो, जिसके जानने से बेटा! ब्रह्म की चेतना जानी जाती है, बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड को जान लिया जाता है। आज हमें इसको जानना है, मैं भी बेटा! आज हम एक सूक्ष्म से सूक्ष्म ब्रह्मे मानो देखो, आज हम ब्रह्म को त्याग करके, नाना प्रकार के परमाणु में चले जाते हैं, वास्तव में परमाणुवाद भी जानना चाहिये, परन्तु परमाणुवाद में जो गति आती है, उनमें जो चेतना है, उसको चेतना देने वाला कोई वस्तु है, हमें उस चेतना को जानना है। मानव के शरीर में जो चेतना आ रही है, उस चेतना का कोई न कोई अस्तित्त्व है, परन्तु देखो, हमें उस चेतना वाले प्राणी को जानना है। उसको जानने से हमारा जीवन बेटा! सर्वोत्तम बन जाता है।

संसार एक कल्पवृक्ष

यह जो संसार तुम्हें दृष्टिपात आ रहा है, ये तो बेटा! एक प्रकार का ऐसा है, जैसा कल्पवृक्ष से मानो यहाँ कल्पना करने के लिये आये हैं। कोई मेरी प्यारी

माताएँ देखो, नाना पुत्रों की कल्पनाएँ करती हैं और मेरे ऋषिवर! नाना प्रकार के तप की कल्पना करते हैं। मानव नाना प्रकार के ऐश्वर्यों की कल्पना करता है, परन्तु यह जो संसार तुम्हें दृष्टिपात आ रहा है बेटा! यह तो एक प्रकार का कल्पवृक्ष है, यहाँ प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्याएँ, प्रत्येक मेरा प्यारा ऋषि मण्डल, सब यहाँ एक प्रकार की कल्पना करने के लिये आ रहे हैं। बेटा! यह जो प्रभु ने रचा है, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों वाला जो ब्रह्माण्ड है, वह सब एक प्रकार का कल्पवृक्ष है, कल्पवृक्ष हमें प्रतीत हो रहा है। एक वार्त्ता मुझे स्मरण आती जा रही है, आज मैं उस वार्त्ता को प्रगट कराने के पश्चात्, हमारा यह वाक्य समाप्त होता चला जायेगा।

एक समय बेटा! देवर्षि नारद मुनि महाराज इस संसार में आ पहुँचे। मृत मण्डल में वह भ्रमण करते रहे और उनके मन में एक कल्पना थी क्या मैं आज किसी मानव को जो सबसे दुखित है उसको मैं स्वर्ग में ले जाने के लिये यहाँ से स्वर्गलोक में ले जाऊँगा। तो मुनिवरो! देवर्षि नारद मुनि उस संसार में भ्रमण करने लगे, भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, दृष्टिपात किया क्या एक मानव बेटा! बड़ा दुखित हो रहा था, वह प्रभु से याचना कर रहा था प्रभु! मैं अब जीवन नहीं चाहता। देवर्षि नारद मुनि बोले अरे! मानव तुम दुखित क्यों हो रहे हो? उन्होंने कहा प्रभु! मैं इस समय बड़ा दुखित हूँ। क्यों दुखित हो, क्या कारण है? महाराज मेरी पत्नी मुझे नित्य प्रति दण्डित करती है। आज मुझे प्रातःकाल में दण्डित किया है, मैं बड़ा दुखित हो रहा हूँ। प्रभु मैं अपना जीवन नहीं चाहता। देवर्षि नारद मुनि बोले अरे! चलो आज मैं तुम्हें स्वर्ग में ले चलूँ, वह मनुष्य बड़ा प्रसन्न हुआ, प्रसन्न हो करके बोला चलिये, प्रभु! देखो, तो मुनिवरो! वह स्वर्ग के लिये उन्होंने प्रस्थान कर लिया। जब स्वर्ग के द्वार पर पहुँचे, देवर्षि नारद मुनि बोले अरे! देखो, भई यह सुरक्षा द्वार है, और यह कल्पवृक्ष है तुम इस कल्पवृक्ष के नीचे विराजमान हो जाओ, मैं भगवान् विष्णु से आज्ञा ले आऊँ कि तुम स्वर्ग में जाने योग्य हो अथवा नहीं। तो मुनिवरो! देखो, नारद मुनि तो स्वर्ग में जा पहुँचे और वह मानव उस कल्पवृक्ष के नीचे विराजमान हो गये। और कल्पवृक्ष के नीचे विराजमान हो करके बेटा! वहाँ मन्द सुगन्ध वायु चल रही थी। मानव का

हृदय बेटा! बड़ा प्रसन्नता में परणित हो गया और मन्द सुगन्ध वायु में प्रभावित हुआ। वह मनुष्य अपने मन में कल्पना करने लगा, अरे! यह तो बड़ा सुन्दर स्थान है, अरे! यहाँ तो तेरे लिये एक आसन होना चाहिये था। अब बेटा! वह तो कल्पवृक्ष था वहाँ कल्पना करते ही एक सुन्दर आसन आ गया, और उस आसन पर वह विराजमान हो गये। जब आसन पर विराजमान हो गये तो बेटा! मन्द सुगन्ध वायु में जब देवर्षि नारद मुनि, नारद जी ब्रह्मम् कृथे आपोति कामा जब नारद मुनि के कथनानुसार कल्पवृक्ष के नीचे कल्पना कुछ और ही करनी थी, परन्तु वह आसन की कल्पना करने लगा। वह मनुष्य कल्पना करने लगा अरे! यहाँ तो एक विश्राम करने वाला भी आसन चाहिये था। बेटा! वहाँ तो वह कल्पवृक्ष था कल्पना करते ही बेटा! एक विश्राम करने वाला आसन लग गया। उस पर बेटा! विश्राम करने लगा और वहाँ जब ऐश्वर्य में ललाहित किया, उस मनुष्य ने कल्पना की अरे! यहाँ तो नाना प्रकार की अप्सराएँ भी होनी चाहिये थीं सेवा करने के लिये। अब बेटा! कल्पना करते ही नाना प्रकार की अप्सराएँ आ गईं सेवा करने के लिये। उस मनुष्य की सेवा होने लगी और उस मनुष्य में यह कल्पना आई अरे! तेरी अगर मृत लोक वाली पत्नी होती तो तेरे ऊपर डण्डा भी होता। अब बेटा! कल्पना करते ही वह पत्नी जी भी आ पहुँची। अब वह मनुष्य आगे है पत्नी भी कहीं न कहीं उसके पश्चात् है, वह दीर्घ गति से भ्रमण कर रहे हैं, इतने में देवर्षि नारद मुनि भी स्वर्ग में से आ पहुँचे। नारद मुनि ने जब उसको दृष्टिपात किया, नारद मुनि ने अपनी दीर्घ वाणी से कहा अरे! कल्पना को त्याग। उसने बेटा! उस कल्पना को त्यागा, न तो पत्नी ही है, न अप्सरा है, न आसन है, वही एक कल्पवृक्ष है, जिसके नीचे मानव विराजमान है।

देवर्षि नारद मुनि बोले अरे! महामूर्ख अरे! तूने कल्पवृक्ष के नीचे आ करके भी भोग विलासों की कल्पना की, अरे! यहाँ यदि तू स्वर्ग की कल्पना करता, तो तुझे यहाँ स्वर्ग प्राप्त हो जाता। अरे! देवता बनने की कल्पना करते, तो देवता बन जाता, अरे! यहाँ तूने मूर्ख, तूने क्या कल्पना की है। तो बेटा! वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह, कि यह जो ब्रह्माण्ड है, नाना लोक-लोकान्तरों वाला, नाना प्रतिभाशाली बेटा! यह एक प्रकार का कल्पवृक्ष है, यहाँ

मानव जैसी भी कल्पना करता है, वैसा ही बनता चला जाता है। यहाँ देवता बनने की कल्पना करोंगे, तो देवता बन जाओंगे। ऋषि बनने की कल्पना करोंगे, तो ऋषि बन जाओंगे। विष्णु बनने की कल्पना करोंगे तो तुम विष्णु बन जाओंगे। जैसा बनने की कल्पना करोंगे, तो बेटा! वैसे ही बनते चले जाओंगे। वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है, क्या एक प्रकार का यह कल्पवृक्ष है।

उपसंहार

देवर्षि ने मुनिवरो! देखो, वहाँ राजा ने कहा क्या, भगवन्! इस आत्मा को ही जानना चाहिये। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे राजन्! इस आत्मा को जानना ही, इस संसार सागर से पार हो जाना है। तो मेरे प्यारे! ऋषिवर वाक्य यह प्रारम्भ हो रहा था, मृत्यु क्या है? **बेटा! मृत्यु है, जिस विषय को हम नहीं जानते, उस विषय की विवेचना करना प्रारम्भ कर देते हैं,** जिसका हमें, क्योंकि परमात्मा की सृष्टि में, बेटा! अनन्तमयी विज्ञान है, अनन्त प्रकार का योग है, बेटा! जैसा प्रभु अनन्त है, वैसी ही देखो, प्रभु की विद्या भी अनन्त है, प्रकृतिवाद भी अनन्त है, लोक-लोकान्तरवाद भी अनन्त है, बेटा! आज के मानव इस शरीर के द्वारा यह जानना चाहे कि मैं प्रभु की अनन्तता को जान जाऊँ, तो बेटा! यह असम्भव है। क्योंकि प्रभु इतना महान् है, और वह इतना अनन्तता में परणित रहता है, सदैव। तो मेरे प्यारे! वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ऋषिवर यह है, आज का हमारा वाक्य क्या कह रहा था, क्या हम आत्मा को जानने का प्रयास करें और आत्मा, क्योंकि संसार में कोई वस्तु भी नष्ट नहीं होती, न तो परमाणुवाद नष्ट होता है, न आत्मा नष्ट होता है, केवल जो सुगठित बना हुआ शरीर था, मुनिवरो! देखो, वह हमारे नेत्रों के समीप नहीं रहा है। उसको मृत्यु स्वीकार कर लो, अथवा उसको अपने से विच्छेदन होना स्वीकार कर लो, जो तुम्हारी इच्छा है। परन्तु मेरे विचार में तो, मैं नहीं कह रहा हूँ, पिप्पलाद ऋषि का वचन है, और यहाँ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, पिप्पलाद जी कहते हैं, क्या मृत्यु संसार में कोई वस्तु नहीं, मानव जब अपमानित होता है,

मानो जो मानव घृणा से रहता है, वह सदैव मृत्यु के मुख में रहता है। उसी का नाम मृत्यु है। आज का यह वाक्य अब समाप्त होने जा रहा है, कल बेटा! समय मिलेगा तो शेष चर्चायें कल प्रगट कर सकेंगे। मुनिवरो! आज का यह वाक्य समाप्त होने चला।

आज का वाक्य यह क्या, हम मृत्यु को जानने का प्रयास करें, आत्मा को जानने का प्रयास करें, आत्मा क्या है क्योंकि आत्मा के कारण ही मानव का शरीर चेतनित रहता है। अब यह जो ब्रह्माण्ड है, लोक-लोकान्तर हैं, यह उस महान् प्रभु के समीप, उस महान् चेतना से चेतनित होते, इसलिए हमें उस प्रभु की चेतना को जानना है, आत्मा को जानना है। यह है बेटा! आज का वाक्। अब वेदों का पाठ होगा, इसके पश्चात् यह वार्त्ता समाप्त हो जायेगी।

दिनाँक : 31 अगस्त, 1969
स्थान : भरतपुर

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि वेबसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

आत्मा का ज्ञान

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ नित्य प्रति कुछ पठन-पाठन की पद्धतियों का वर्णन आता रहता है। जब हम विचार-विनिमय करने लगते हैं कि पद्धतियों का अभिप्रायः क्या है? **पद्धति उसे कहा जाता है, जिसकी प्रतिभा में वृद्धपन नहीं आता, उसमें सदैव नवीनता रहती है।** हमारे यहाँ वेद की जो सुन्दर-सुन्दर पद्धतियाँ हैं, जैसे नाना प्रकार के स्वरों में, नाना प्रकार के जो स्वर हैं, उनमें जो उद्गार, जो उद्गम हैं, परन्तु वह नाना प्रकार के कहलाये गये हैं। जैसे जटा-पाठ, घन-पाठ, माला-पाठ, विसर्ग-पाठ और उदात्त अनुदात्त, हमारे यहाँ नाना और भी नाना प्रकार के वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया जाता है। जैसे माला पाठ है, हमारे यहाँ बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार-विनिमय चलते रहते हैं।

माला पाठ

मुझे स्मरण आता है, एक समय महर्षि भृगु आश्रम में, महर्षि लोमश, सोमकेतु शौनक इत्यादि ऋषियों का आगमन हुआ। परन्तु महर्षि भृगु जी से प्रश्न किया गया, कि महाराज हम माला पाठ को जानना चाहते हैं, माला पाठ किसे कहा जाता है। महर्षि भृगु जी ने इसके ऊपर अनुसन्धान नहीं किया था। उन्होंने कहा कि महाराज, यह जो आश्रम हमें निकट प्रतीत हो रहा है, दृष्टिपात आ रहा है यहाँ महर्षि पिप्पलाद जी रहते हैं, उनके द्वार चलते हैं, और उनसे प्रश्न करेंगे। वह ऋषिवर और भृगु जी का, सभी ऋषियों का प्रस्थान हुआ। भ्रमण करते हुए जब पिप्पलाद आश्रम में पहुँचे तो बेटा! महर्षि पिप्पलाद जी ने कहा क्या, महाराज! मैं इसको नहीं जानता हूँ, मैं भी इसके ऊपर अभी अनुसन्धान

कर रहा हूँ, और अभी मेरा अनुसन्धान प्रारम्भ है। क्योंकि मैंने प्रारम्भ में ही इसका विवेचन कर दिया, तो भगवन् उसमें किसी प्रकार का यदि दोषारोपण हो गया तो प्रभु! यह वाक्य कहा मेरा मस्तिष्क नीचे गिर जायेगा। तो ऋषि ने बेटा! तो उन्होंने महर्षि पिप्पलाद मुनि ने कहा, यह जो आश्रम हमें आगे प्रतीत हो रहा है, यह अगला आश्रम महर्षि पापड़ी मुनि महाराज का है। चलो, इसके द्वारा हमारा आगमन होगा और वह हमारे प्रश्नों का यथाशक्ति उत्तर देंगे। तो बेटा! वह भ्रमण करते हुए, ऋषियों का आगमन, महर्षि पापड़ी मुनि महाराज के द्वारा हुआ। तो बेटा! तुम यह प्रश्न करोंगे, महर्षि पापड़ी मुनि कौन थे। बेटा! वह महर्षि आदित्य मुनि महाराज के सत्रहवें प्रपौत्र कहलाते थे। परन्तु जब महर्षि पापड़ी मुनि महाराज के द्वार पर पहुँचे, तो ऋषियों का उसने जब आगमन दृष्टिपात किया, तो ऋषि का हृदय बेटा! गद्-गद् हो गया। उस समय बेटा! मुनिवरों वेद मन्त्र के उन विचारों में देखो, मन मग्न हो रहे थे। उनको वह नित्य प्रति अनुसन्धान, विचारधाराएँ प्रारम्भ रहती थीं। तो बेटा! जब उनके द्वारा ऋषि वरूण का आगमन हुआ, तो ऋषि-मुनियों ने उन्हें नत-मस्तिष्क हो करके प्रणाम किया और प्रणाम करके ऋषियों ने कहा कि महाराज! हम तो आपके समक्ष इसलिए आये हैं, कि माला पाठ किसे कहते हैं, हम माला पाठ को जानना चाहते हैं? ऋषि ने कहा बहुत सुन्दर आईये भगवन्! पधारिये।

वह सब बड़े आनन्दपूर्वक ऋषि मुनि सब विराजमान हो गये। विराजमान हो जाने के पश्चात्, उन्होंने कहा कि महाराज! अब आप प्रश्न कीजिए क्या प्रश्न था। हम यह जानना चाहते हैं कि माला पाठ किसे कहते हैं? ऋषि ने कहा कि महाराज, तो ऋषि ने कहा कि मैंने जो जाना है, उसी को निर्णय कर सकता हूँ, परन्तु मैं, यदि उसके ऊपर विवाद प्रारम्भ हो जायेगा, तो मैं उस विषय में कोई वाक्य उच्चारण नहीं करूँगा। महर्षि शौनक जी ने कहा प्रभु! हम तो वही जानने आये हैं, जो आप जानते हैं। उन्होंने कहा कि माला पाठ किसे कहते है? वेद को तुम जानते ही हो, परन्तु वेद में जो नाना प्रकार के मन्त्र हैं, मन्त्रों में भी जो शब्द हैं, मानो जो ऋचाएँ हैं, उनको भी जानते हो, श्रवण भी किया है। ऋषि ने कहा कि महाराज अवश्य किया है। तो ऋषि ने उत्तर दिया कि हम माला पाठ उसे कहा

करते हैं, माला कहते हैं धागे में जो मनके पिरोएँ हुए होते हैं। जब धागे में मनके पिरोएँ जाते हैं, तो वह **मनके और धागे दोनों एक सूत्र में आ जाने का नाम माला कहलायी जाती है।** इसी प्रकार हे मेरे प्यारे! ऋषि मण्डल इसी प्रकार यह जो परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है जो दृष्टिपात आ रहा है और **यह जो वेदों का ज्ञान है, वेदों की जितनी ऋचाएँ हैं, वह ओ३म् रूपी धागे से पिरोई हुई रहती हैं।** मानो देखो, **यह जो वेद रूपी ऋचाएँ हैं, यह एक प्रकार के मनके हैं, और ओ३म् रूपी धागे में पिरोई हुई हैं,** इसीलिये हमारे यहाँ वेद के प्रारम्भ में, वेद के मन्त्र को जब उच्चारण करते हैं, तो बेटा! म् का उच्चारण आचार्यजनों क्योंकि वेद की ऋचाएँ म् का उच्चारण क्यों किया करते हैं? किया करते हैं। ओ जो ऋचाओं का हमने पठन-पाठन किया, परन्तु उच्चारण किया स्वरों सहित, और उसमें सबसे प्रारम्भ ओ३म् को उच्चारण करते, क्योंकि ओ३म् रूपी धागा बना करके और वेद मन्त्र में जो ज्ञान और विज्ञान है, वह उस ओ३म् रूपी धागे से बेटा! पिरोया हुआ है जितना भी ज्ञान विज्ञान है अथवा वह भौतिक विज्ञान हो, अथवा वह आध्यात्मिक विज्ञान हो परन्तु ओ३म् रूपी धागे से बेटा! वह पिरोया हुआ होता है। इसीलिये मैंने तो यह जाना है। तो ऋषि कहते हैं हे ऋषिवरो! क्या **यह जितना जगत है, जितना ब्रह्माण्ड है जितना इसमें प्राणीमात्र है, मानो ये सब मानो ओ३म् रूपी धागे से पिरोया हुआ है।** यह एक प्रकार का जो ब्रह्माण्ड है, यह माला के रूप में परणित हो रहा है, और इसमें ओ३म् रूपी जो धागा है, वह पिरोया हुआ है, इसलिए इसको हमारे यहाँ माला पाठ कहा जाता है।

मेरे प्यारे! ऋषिवर, ऋषिवरों की सन्तुष्टि हो रही थी। उन्होंने कहा कि महाराज प्रतीत तो ऐसा ही होता है कि माला पाठ, इसी को कहा जायेगा। परन्तु इसका अभिप्रायः अब ऋषि जी कहते हैं, शौनक जी ने कहा कि महाराज! क्या हम एक ही पाठ को, हम माला पाठ कहते हैं क्योंकि जैसे हमारे मधु पाठ है, और आरण्य पाठ है, कृतिकि पाठ है, और देखो, जैसे जटा पाठ और घन पाठ है, परन्तु इनमें भी ओ३म् का उच्चारण किया जाता है। तो ऋषि कहते हैं कि माला पाठ का अभिप्रायः यह है कि जैसे माला, जैसे माला को रचन्त किया जाता है, माला को कृतियों में किया जाता है, उसकी प्रतिभा को जाना जाता है,

मानो उसी प्रकार जब हम जटा पाठ की भाँति जटा पाठ को जड़ की भाँति जान लेते हैं तो उनमें उच्चारण करने में भेदन हो जाता है। तो भेदन होने के नाते उसको माला पाठ कहा जाता है। क्योंकि माला पाठ को हम भेदन के कारण करने लगते हैं, किसी विशेष पठन-पाठन की जो प्रक्रियाएँ हैं, उनमें नाना प्रकार के भेदन हैं, उन भेदनों को, हमने भिन्न-भिन्न रूपों से उनका निरूपण किया है।

इसलिए मानो एक को विशेष नहीं कहा जा सकता है। तो मेरे प्यारे! ऋषिवर महर्षि भृगु जी ने कहा अरे! भोले ऋषिवरों क्या तुम्हारी सन्तुष्टि हुई? तो उन्होंने कहा कि महाराज इसके ऊपर तो हम विचार-विनिमय करेंगे। परन्तु यहाँ नहीं करेंगे, तो हम अपने आश्रमों में जा करके, विचार-विनिमय करेंगे। अनुसन्धान करेंगे, हम उनकी वार्त्ताओं को, हमने श्रवण कर लिया है, और आत्मा ने उसको ग्रहण कर लिया है। परन्तु देखो, उससे हमारी कुछ सन्तुष्टि हुई है।

वेद का पथिक

मेरे प्यारे! ऋषिवर हमारे यहाँ जो ब्रह्म विचारक होते हैं, वह वेद के ऊपर महा अनुसन्धान करते हैं, और अपनी प्रवृत्तियों पर अनुसन्धान करना है, यही नहीं कि वेद के अक्षरों पर हमें अनुसन्धान करना है, परन्तु देखो, जो वेद की हमें प्रतिभा आज्ञा दे रही है, उसे हम अपने हृदय में, अपनी मानवता में, अपनी अन्तरात्मा में धारण करना है, और उसके ऊपर हमें अपने जीवन को अग्रणीय बनाना है। तो मेरे प्यारे! ऋषिवर उसी काल में हम वेद के विशेषज्ञ बन सकते हैं, हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने तो ऐसा कहा है, क्या, आज वेद के अक्षरों को जानने वाला, ब्राह्मण नहीं कहलाता है। मानो जो अक्षरों के जानने वाला होता है, मानो वह तो एक प्रकार की रटन्त विद्या है। परन्तु जो मानव उसके ऊपर अपने जीवन को धारण करता है, और उस मार्ग का पथिक बन जाता है, वह मानव वेद का पथिक कहलाया जाता है। बेटा! तो मेरे प्यारे! ऋषिवर आज का हमारा वेद मन्त्र, आज की हमारी यह प्रतिभा क्या कहती चली जा रही थी, आज मुझे बेटा! इतना गम्भीर विषय उच्चारण नहीं करना, वाक्य यह प्रारम्भ करना है कि हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा

को जानते हुए हम अपने जीवन को वास्तव में अग्रणीय बनायें और महान् से महान् बनाने का प्रयास करें, क्योंकि आत्मा का ज्ञान ही हमारा ज्ञान है। जैसा मैंने कल के वाक्यों में तुम्हें प्रगट कराया है कि आत्मा के प्रकाश से ही मानव प्रकाशित होता है, आत्मा की ही ज्योति से मानव क्रियाशील हो रहे हैं। उसी में चेतनित हो रहा है, हमें उस चेतनित को, उस चेतना को जानना है जिस चेतना के आधार पर बेटा! यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड क्रियाशील हो रहा है।

वास्तविक पद्धति

आओ, मेरे प्यारे! ऋषिवर आज का हमारा वेद मन्त्र क्या उच्चारण कर रहे थे, वेद वाक्य बेटा! नाना प्रकार की उसकी प्रक्रियाएँ और नाना प्रकार की पद्धतियाँ होती हैं। जिनके जटा-पाठ, घन-पाठ, माला-पाठ, विसर्ग-पाठ, उदात्त, अनुदात्त नाना प्रकार के वेद मन्त्रों का पठन-पाठन नाना प्रकार से किया जाता है। आज हम उस पद्धतियों को अपनाने का प्रयास करें। **पद्धति उसे कहा जाता है – जिस पद्धति में बेटा! वृद्धपन नहीं आता, सदैव नवीनतव रहता है।** इसलिए वेद का जो ज्ञान है, पवित्र ज्ञान है, बेटा! वह किसी भी काल में उसमें वृद्धपन नहीं आता, सदैव नवीनवाद रहता है, नवीनता रहती है। इसमें सदैव बेटा! पवित्रवाद देखो ही वाद रहता है उसमें बेटा! घृणा नहीं होती है, उसमें उल्लास हुआ करता है बेटा! तो मेरे प्यारे! ऋषिवर आज का वाक्य हमारा क्या कह रहा था – हम वास्तविक पद्धति को अपनाने का प्रयास करें।

पदार्थों का विभाजन

बेटा! एक वार्त्ता मुझे स्मरण आती चली जा रही है कि मैंने बहुत पूर्व काल में प्रकट कराया था, आज भी मुझे स्मरण आती चली जा रही है। एक वार्त्ता, क्योंकि आत्मा का विषय, आत्मा की चर्चा प्रारम्भ हो रही थी। मानव को विचार-विनिमय करना है कि आज हमें आत्मा को जानने के लिये कितना प्रयत्न करना है, कितना संघर्ष करना है, कितना अनुसन्धान करना है, क्योंकि संसार में यदि हम वास्तविक रूपों से विचार-विनिमय करते हैं तो प्रत्येक वस्तु हमें

अनुसन्धान के लिये प्रेरित करती रहती है। आज हम किस-किस वस्तु का अनुसन्धान करें, एक मानव की, मुनिवरो! नेत्रों की दृष्टि जाती है, नेत्रों की दृष्टि किसी पदार्थ पर दृष्टिपात करती है और उस पदार्थ पर दृष्टि जाते ही विभाजन हो जाता है। परन्तु वह विभाजन किस प्रक्रिया से हुआ है? किस प्रकार हुआ है? हमें देखो, उसके ऊपर भी अनुसन्धान करना है हमारी वाणी में कितने प्रकार की वाणी है, कितना प्रकार है इनमें, कहीं राष्ट्रीय वाणी है, कहीं मानवीय वाणी है, कही आत्मिक वाणी है, कहीं मुनिवरो! देखो, नाना प्रकार की वाणियों पर विवेचन होता रहता है, उनके ऊपर अनुसन्धान करना है। अरे! **मानव आज तुझे यदि अनुसन्धान करना है, तो सबसे प्रथम अपने मानव जीवन का अनुसन्धान करना होगा।** क्योंकि मानव जीवन का यदि अनुसन्धान नहीं हुआ, मानव जीवन को वैज्ञानिक रूपरेखा, मानव को, अपने मानव जीवन की वैज्ञानिक रूपरेखा नहीं बनाई तो बेटा! हमारा जीवन शून्यता को प्राप्त होता रहेगा।

आत्मज्ञता

मैंने बहुत पूर्व काल में अपने विवेचन देते हुए कहा था, आज का मानव, संसार का वैज्ञानिक बनना चाहता है, सार्वभौम वैज्ञानिक बनना चाहता है तो अपनी प्रक्रियाओं को जान जाओ, क्योंकि संसार में दो प्रकार की प्रक्रियाएँ होती रहती हैं – एक वह वस्तु है जिसका विभाजन होता है और एक वह वस्तु है जो विभाजन कर देती है बेटा! देखो, तो मुनिवरो! वह वैज्ञानिक रूपों से जब इसके ऊपर दृष्टिपात करोंगे, अहा देखो, विभाजन किसका होता है? और कौन विभाजन करता है? इसके ऊपर विचार-विनिमय करना बहुत अनिवार्य है। तो वेद का आचार्य कहता है, ऋषि कहता है, यहाँ तो महाराजा दिग्ध ने भी कहा है, महर्षि सोमपान इत्यादि आचार्यों ने भी कहा है क्या विभाजन कौन-सी वस्तु का होता है बेटा! **विभाजन सदैव प्राणों का होता रहता है और विभाजन करने वाला संसार में यह मनीराम कहलाया जाता है।** वह इस मानव शरीर में हो, अथवा सूर्य मण्डल में हो, चन्द्र मण्डल में हो, मङ्गल में हो, पृथ्वी के गर्भ में हो,

नाना प्रकार के खाद्य पदार्थों और खनिज पदार्थों में हो, परन्तु इतना विभाजनवाद, विभाजन होता है, वह महर्षि कपिल मुनि जी का सिद्धान्त कहता है। परन्तु वह महर्षि काकड़ी आदि देखो, ऋषियों का सिद्धान्त भी यही कहता है, आज मैं बेटा! उन विषयों पर जाना नहीं चाहता हूँ जो बहुत सूक्ष्म हैं। परन्तु वाक्य यह उच्चारण करना था कि आत्मा को जानना हमारे लिये बहुत अनिवार्य है। क्योंकि आत्मा की यदि क्षुधा हमारी पीड़ित रही तो बेटा! हमारा जीवन कुछ नहीं कहलायेगा। एक मानव प्रातः काल से सायंकाल तक अपने उदर की पूर्ति के लिये विचार-विनिमय करता रहता है और अपने उदर की पूर्ति के लिये बेटा! प्रयत्नशील रहता है। परन्तु यदि उसने अपनी आत्मा की पिपासा के लिये, आत्मिक देखो, क्षुधा को शान्त करने का प्रयत्न नहीं किया तो बेटा! परम शान्ति मानव को प्राप्त हो ही नहीं सकती। तो मेरे प्यारे! ऋषिवर आज का हमारा वाक्य क्या कह रहा था कि हमें आत्मा को जानना चाहिये। विचार-विनिमय यह करना है कि आत्मा है क्या, आत्मा किसे कहते हैं। आत्मा किसी भी काल में नष्ट नहीं होता, यह आत्मा किसी काल में वृद्धपन को भी प्राप्त नहीं होता।

प्रजापति द्वारा घोष

मेरे प्यारे! ऋषिवर आज का हमारा वेद का विषय क्या कह रहा था। मुझे एक वार्त्ता स्मरण आती चली जा रही थी, आज के इस वाक्य में एक समय बेटा! महाराजा प्रजापति के यहाँ से घोष हुआ और उस घोष में यह हुआ कि मैं आत्मा का ज्ञान करा देता हूँ। तो मुनिवरो! जब आत्मा के लिये उसमें देखो घोषणा हुई, यह घोष हुआ तो यह घोष मुनिवरो! दैत्यों और देवताओं, दोनों ने ही श्रवण किया। जब दैत्यों ने श्रवण किया, दैत्यों ने अपनी सभा की और सभा में बेटा! विरोचन को निमन्त्रित किया और विरोचन को सभापति बना करके देखो, सभी दैत्यों ने कहा कि महाराज! आपको देखो महाराजा प्रजापति के यहाँ से घोष हुआ है और यह घोषणा उन्होंने की कि मैं आत्मा का ज्ञान करा देता हूँ। आज जैसा शुभ अवसर किसी भी काल में प्राप्त नहीं होगा भगवन्! क्योंकि जहाँ एक इस प्रकार की घोषणा आत्मा के ज्ञान के ऊपर होती है। महाराज विरोचन ने

कहा देखो, बहुत सुन्दर। तो महाराज विरोचन को बेटा! दैत्यों ने कहा कि महाराज आप यहाँ से अपना प्रस्थान कीजिए और प्रजापति के यहाँ अपनी वार्त्ता और अपनी आत्मा का ज्ञान ले करके हमें ज्ञान कराईये। मुनिवरो! वह विरोचन ने अपने स्थान को त्याग दिया।

देव और दैत्य प्रजापति की शरण में

अब मुनिवरो! देखो, देवताओं की सभा हुई, देवताओं की सभा में मुनिवरो! देखो, महाराज इन्द्र ने देखो, महाराजा को सभापति बनाया तो देवताओं ने नत-मस्तिष्क हो करके कहा कि महाराजा प्रजापति के यहाँ से एक घोषणा हुई है, घोष हुआ है कि आप जाईये और देखो, प्रजापति के यहाँ से आत्मा का ज्ञान ले करके हमें आत्मा का ज्ञान कराईये। उस समय बेटा! महाराज इन्द्र ने कहा बहुत सुन्दर।

इन्द्र और विरोचन का प्रजापति आश्रम में प्रवेश

मुनिवरो! देखो, एक स्थान से एक दैत्यराज विरोचन का प्रस्थान हुआ और द्वितीय स्थान से बेटा! देखो, देवताओं के धिराज इन्द्र का प्रस्थान, अपने आसन पर हुआ। तो मुनिवरो! भ्रमण करते हुए भयङ्कर वन में जा करके दोनों का मिलान हुआ। दोनों का परिचय हुआ, परिचय होते ही बेटा! एक गुरु के शिष्य बनने के लिये उन्होंने अपना आगमन किया, तो भ्रमण करते हुए प्रजापति आश्रम में जा पहुँचे। महाराजा प्रजापति ने बेटा! उनका सुन्दर स्वागत किया, आसन दिया विराजमान हो गये। परन्तु वह भयङ्कर वन से तीन-तीन समिधा ले करके आये थे तो मुनिवरो! देखो, गुरु के चरणों में तीन-तीन समिधा को एकत्रित किया और यह कहा कि महाराज हमने एक घोष आपके यहाँ से श्रवण किया है कि आप आत्मा का ज्ञान कराते हैं, हमें आत्मा का ज्ञान कराईये। उस समय बेटा! महाराजा प्रजापति ने कहा बहुत सुन्दर, यह मेरी घोषणा हुई थी, आत्मा का ज्ञान अवश्य दूँगा। परन्तु मेरे आश्रम का यह नियम है, क्या तुम बत्तीस-बत्तीस वर्ष तक मेरे यहाँ ब्रह्मचर्य का पालन करो और तपस्वी बनो।

ब्रह्मचर्यव्रत का पालन

मुनिवरो! देखो, दोनों ने इस वार्त्ता को स्वीकार कर लिया, क्योंकि गुरु का वाक्य शिरोमणी था। तो मुनिवरो! देखो, ब्रह्मचर्य के व्रत को धारण करके दोनों आश्रम में विराजमान हो गये और परमात्मा का चिन्तन करने लगे। ब्रह्मचर्य की रक्षा करते हुए ब्रह्मचर्य में रमण करने लगे। मैंने बेटा! ब्रह्मचर्य की मीमांसा करते हुए कहा है, पूर्व काल में ब्रह्मचारी किसे कहते हैं? जिसकी प्रवृत्तियाँ बेटा! देखो मानसिक प्रवृत्तियाँ ब्रह्म में विचरण करने लगती हैं, उसको ब्रह्मचारी कहते हैं। तो मुनिवरो! देखो, दोनों ब्रह्मचर्य का व्रत ले करके चिन्तन करने लगे प्रभु का, चिन्तन चलता रहा, अपनी-अपनी नित्य क्रियाओं से नित्य प्रति निवृत्त होते और क्रियाओं से निवृत्त हो करके ब्रह्म का विचार चलता और प्रभु का चिन्तन और मुनिवरो! नाना प्रकार की मानसिक सुन्दर कल्पनाएँ चला करती थीं।

शरीर ही आत्मा?

इसी प्रकार बेटा! समय आया बत्तीस वर्ष समाप्त हो गये, बत्तीस वर्ष के पश्चात् दोनों जिज्ञासु प्रजापति के चरणों में ओत-प्रोत हो गये। उन्होंने कहा प्रभु! हमें आत्मा का ज्ञान कराईये। महाराजा प्रजापति ने कहा अरे! इन्द्र, हे विरोचन! यह जो मानव का शरीर तुम्हें दृष्टिपात आ रहा है इसी को हमारे यहाँ आत्मा स्वीकार किया गया है। इसी को आत्मा जानों, और इसी का पालन-पोषण और इसी की रक्षा करो। तो मुनिवरो! देखो, विरोचन और इन्द्र ने, दोनों ने प्रजापति के आसन को त्याग दिया और भयङ्कर वन में जा पहुँचे। महाराजा विरोचन तो बेटा! देखो, दैत्यों की सभा में जा पहुँचे और इन्द्र ने भयङ्कर वन में जा करके यह विचारा कि जब मैं देवताओं के समक्ष जाऊँगा, और जब वह प्रश्न करेंगे कि आत्मा क्या है? तो मैं जब शरीर को आत्मा कहूँगा तो वह मुझे वह नाना प्रकार के लोग प्रश्न करेंगे, तो उनका क्या उत्तर दूँगा, क्योंकि यह शरीर तो क्षण भंगुर है और इसका कोई भी अङ्ग-भङ्ग हो जाता है, परन्तु मानव शरीर जीवित रहता है, नेत्र नष्ट हो जाते हैं, परन्तु मानव शरीर जीवित रहता है। अहा! देखो, जीवन तो इसमें कोई और ही पदार्थ है, और ही वस्तु है, यह शरीर मुझे आत्मा प्रतीत नहीं होता। क्योंकि

यह शरीर तो केवल मानो कार्य करने के लिये है, आज मिला हुआ है, इसी के लिये प्राप्त किया गया है। तो इसलिए मुझे यह प्रतीत होता है कि यह शरीर आत्मा किसी काल में हो ही नहीं सकता क्योंकि शरीर का कोई भी अङ्ग नष्ट हो जाता है परन्तु मानव जीवन क्रियाशील रहता है। अरे! क्रिया देने वाला तो कोई और ही वस्तु है, इससे मुझे यह प्रतीत होता है, क्या यह शरीर आत्मा नहीं है।

इन्द्र का पुनः से आगमन

बेटा! देखो, महाराजा इन्द्र तीन समिधा ले करके बेटा! पुनः उन्होंने अपना प्रस्थान किया, भ्रमण करते हुए महाराजा प्रजापति आश्रम में जा पहुँचे, और प्रजापति से कहा कि महाराज! यह मुझे शरीर आत्मा प्रतीत नहीं हो रहा है। क्योंकि यह शरीर तो क्षण भङ्गुर है और शरीर का कोई भी अङ्ग नष्ट हो जाता है, परन्तु जीवन ज्यों का त्यों रहता है। जीवन में किसी प्रकार की अपङ्गता नहीं आती है, इससे मुझे यह प्रतीत होता है भगवन्! आत्मा कोई और वस्तु है। महाराजा प्रजापति ने कहा अरे! इन्द्र यह तुम्हारा वाक्य यथार्थ है, परन्तु मेरे आश्रम का नियम है, क्या तुम बत्तीस वर्ष तक पुनः तपस्या करो। मुनिवरो! वह बत्तीस वर्ष तक पुनः तपस्वी बने और बत्तीस वर्ष तक ब्रह्म का चिन्तन किया, बत्तीस वर्ष बेटा! ऐसे समाप्त हो गये ब्रह्म के चिन्तन में जैसे एक मानव स्वप्नवत को प्राप्त हो जाता है। वह समय समाप्त हुआ।

स्वप्न अवस्था

मुनिवरो! वह पुनः प्रजापति के पास पहुँचे और प्रजापति से कहा हे प्रजापते! आप मुझे निर्णय कराईये की आत्मा क्या है? उन्होंने कहा कि हे इन्द्र! यह जो जिस अवस्था में हम स्वप्न को प्राप्त होते हैं, यह जो स्वप्न अवस्था है इसी को आत्मा कहते हैं। इसी का तुम चिन्तन करो। तो मुनिवरो! देखो, महाराजा इन्द्र ने पुनः आसन को त्याग दिया, भयङ्कर वन में जा पहुँचे। चिन्तन प्रारम्भ होने लगा और यह विचार आया कि मानव जब स्वप्नवत को प्राप्त होता है अहा.....

शेष अनुपलब्ध। **दिनाँक :** 1 सितम्बर, 1969

॥ ओ३म् ॥

त्री-विद्या

बेटा! आज मैं योग के क्षेत्र में जाना नहीं चाहता हूँ। मैं तुम्हें एक वार्ता प्रकट कराने जा रहा हूँ। आज हमारे वैदिक-साहित्य में त्रयी-विद्या का वर्णन आ रहा था। वेद का ऋषि कहता है कि यह संसार तीनों में निहित रहता है। यह जो संसार हमें दृष्टिपात आ रहा है यह त्रैतवाद में परणित हो रहा है। त्रैतवाद में मानव का जीवन प्रतिष्ठित हो रहा है–रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण। इसी प्रकार आत्मा, परमात्मा और प्रकृति त्रैतवाद में रमण कर रहा है। यह सर्वत्र जगत त्री पादों में निहित रहता है।

मुनिवरो! जब महाराजा बलि ने याग किया था तो उस समय वामन ने तीन पगों में इस संसार को नाप लिया था। उनके तीन पग क्या थे? सबसे प्रथम पृथ्वी लोक, उसके पश्चात् द्यु लोक, अन्तरिक्ष लोक ये तीनों पाद थे, इन तीनों पादों में ही संसार को नाप लिया था। वह कौन था वामन! **हमारे यहाँ वामन नाम सूर्य को कहते हैं और बलि नाम रात्रि को कहते हैं।** क्यों रात्रि में भी याग होता रहता है। **याग का अभिप्राय शुभ कामना, शुद्धता।** जब मानव प्रातः काल से सायंकाल तक दुखित हो जाता है, कार्य करता हुआ और जब रात्रि को निद्रा की गोद में चला जाता है, अहल्या की, बलि की गोद में चला जाता है, एकाकी प्राणी जागरूक रहता है अन्यथा सर्व इन्द्रियाँ सुषुप्ति में चली जाती हैं, मन भी सुषुप्ति में चला जाता है, एकोकी प्राण आत्मा के साथ गमन करता है। उस समय जब यह देवताजन जागरूक होते हैं प्रभु से उपासना करते हैं यह वामन अवतार आते हैं। वामन आते हैं, उनके तीन पाद होते हैं अथवा उसकी तीन किरण होती हैं। प्रथम किरण में इस द्यु लोक को नाप लिया जाता है, द्वितीय चरण में इस अन्तरिक्ष को और तृतीय पाद में पृथ्वी मण्डल को नाप लिया जाता है। तो वह कौन है? बेटा! आदित्य नाम सूर्य है, वामन नाम सूर्य का है। जब प्रातःकाल में सूर्य उदय

होता है तो सुहावना होता है, उसी की आभा से यह संसार प्रकाशमान हो जाता है। आज मैं दर्शनों की व्याख्या में नहीं जा रहा हूँ। आज मैं तुम्हें एक गाथा प्रकट किए देता हूँ।

मेरे प्यारे! महानन्द जी एक लोक कथा वर्णन कराते रहते हैं। हमारे वैदिक साहित्य में त्री-विद्या का वर्णन आता है। जो मानव इस संसार से मोक्ष चाहता है, महत्ता को प्राप्त करना चाहता है, तो मानव को त्री-विद्या को अपने में धारण कर लेना चाहिए। त्री-विद्या को जो मानव धारण कर लेता है वह मानव नहीं देवता बन जाता है। वह मानव, मानव नहीं, पितर नहीं, वह देवत्व को प्राप्त कर लेता है। वह त्री-विद्या क्या है? मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक समय प्रकट करते हुए कहा था कि एक समय समुद्र के तट पर एक टिटिहरी नाम का पक्षी रहता था। उस पक्षी के दो पुत्र अण्डे थे, उन अण्डों को समुद्र की तरङ्गों ने अपने में ग्रहण कर लिया। अब टिटिहरी ने विचारा कि मैं समुद्र को शान्त करना चाहती हूँ। मुझे अपने पुत्रों की रक्षा करनी है। तो कहा जाता है कि टिटिहरी पृथ्वी के कणों को लाती और समुद्र को शान्त करना चाहती थी। कहते हैं इतने में अगस्त्य मुनि आ गए और कहा कि हे देवी ! यह तुम क्या कर रही हो? उन्होंने कहा कि महाराज ! इस समुद्र ने मेरे साथ आत्मघात किया है। मेरे दोनों पुत्रों को अपने में रमण कर लिया है। मैं समुद्र को शान्त करना चाहती हूँ। उन्होंने कहा कि यह समुद्र इस प्रकार शान्त न होगा। कहते हैं कि अगस्त्य मुनि ने तीन आचमन किए और इस समुद्र को पान करके खारी बना करके पक्षी के द्वार जा पहुँचे। ऐसी लोकोक्तियाँ आती रहती हैं। वेद का ऋषि भी कहता है ''अगस्त्याम् बृह अस्तम् ब्रह्म अस्ताः त्री निधनम् लोह अस्ताः खंवृति अस्ते शुद्धि अस्ताः।'' इस सम्बन्ध में और भी लोकोक्तियां आती रहती हैं। मानव को विचार विनिमय कर लेना चाहिए और इसकी व्याख्या को ऊँचे रूप से विचारना चाहिए।

मुनिवरो! देखो, टिटिहरी नाम इस मानव शरीर में निवास करने वाले आत्मा को कहा जाता है। **हमारे वैदिक साहित्य में टिटिहरी नाम आत्मा**

को कहा है और इस आत्मा के दो पुत्र हैं मन और बुद्धि। यह मन और बुद्धि दोनों संसार सागर में रमण कर जाते हैं। मन इस संसार को अपना कुटुम्ब स्वीकार कर लेता है, मिथ्या वाक्यों को अपना लेता है, तो ये संसार में तरङ्गें ओत प्रोत हो रहीं-कहीं मान की तरङ्गें हैं, कहीं अपमान की तरङ्गें हैं, कहीं इसको मुक्त कराने के लिए विचारा जा रहा है, कहीं संसार रूपी जो तरंगित समुद्र है, इसमें यह मन और बुद्धि रमण कर जाते हैं। इसमें विचरण करने लगते हैं, कहीं अपनी पत्नी में सुख अनुभव कर रहा है, पत्नी अपने पति में सुख अनुभव कर रही है, पुत्रों में, कुटुम्ब में सुख अनुभव कर रहे हैं। इस संसार में जो तरङ्गें रजोगुण, तमोगुण की हैं इन्हीं तरङ्गों में मन और बुद्धि दोनों भ्रमित हो जाते हैं। इन्हें कोई मार्ग प्राप्त नहीं होता। जब कोई भी मार्ग प्राप्त नहीं होता तो उस समय यह अन्तरात्मा जो इस मानव शरीर में विराजमान है, यह दुःखित होती है और यह कहीं से ज्ञान रूपी कणों को लाकर के समुद्र को शान्त करना चाहती है। ज्ञान के कणों से जब यह शान्त नहीं होता तो ज्ञान का इतना प्रभाव होता है कि ज्ञान का दूसरा स्वरूप उत्पन्न हो जाता है जिसको विवेक कहते हैं। **अगस्त्य नाम विवेक को कहा गया है।** जब यह विवेक उत्पन्न होता है तो आत्मा से कहता है कि यह तुम क्या कर रहे हो। उन्होंने कहा कि महाराज इस समुद्र को शान्त करना चाहता हूँ। अपने मन, बुद्धि की रक्षा करना चाहता हूँ। उस समय वह जो अगस्त्य रूपी विवेक है वह इस समुद्र के तीन आचमन कर लेता है। **तीन आचमन क्या हैं? वे ज्ञान, कर्म और उपासना ये तीन आचमन हैं।** इन तीन आचमनों को पान करने वाला कौन है? वह अगस्त्य, विवेक है। जब तीन आचमन कर लेता है तो उस समय इस संसार को जैसे उपस्थ इन्द्रिय के द्वारा खारी बना करके जल को त्याग देता है। इसी प्रकार इस समुद्र को विवेकी पुरुष इस संसार को नीरस स्वीकार करके त्यागते चले जाते हैं।

आज मैं विवेक की चर्चा कर रहा था। विवेक अगस्त्य को कहते हैं। देखो माता ने यह संकल्प किया था कि मेरा पुत्र अगस्त्य है। अगस्त्य कौन

है? **अगस्त्य विवेकी पुरुष को कहा जाता है।** माता जब यह विचारती है कि मेरा बालक विवेकी होना चाहिए। तुम्हें यह प्रतीत है अगस्त्य मुनि महाराज की गाथा का वर्णन होता रहता है। अगस्त्य मुनि महाराज के जीवन को लाखों वर्ष हो गए हैं। ऋषि की गाथा आज भी स्मरण आती रहती है। जहाँ अगस्त्य नाम के ऋषि हैं वहाँ अगस्त्य नाम विवेक का है, टिटिहरी नाम आत्मा का है। मन बुद्धि दोनों इसके पुत्र हैं, जो संसार में रमण करते रहते हैं। तो आज हमें विचारना चाहिए, हमें ये तीन आचमन, करने चाहिए। तीन आचमन कौन से हैं? सबसे पूर्व ज्ञान आता है। वाणी देखो ज्ञान की गाथा गा रही है। सबसे प्रथम आचमन ज्ञान है। उसके पश्चात् कर्म है क्योंकि कर्म ज्ञान के द्वारा उत्पन्न होता है और कर्म के पश्चात् उपासना है, हमें अपने प्रभु को समर्पित कर देना चाहिए। तीन आचमनों को जो मानव पान करता है वह संसार में महापुरुष है, देवता है वह अपनी इन्द्रियों को आभाओं से मुक्त करने वाला है।

आज बेटा ! मैं इस विषय पर चर्चा तो प्रकट करने आया नहीं हूँ मैं आज बिखरे हुए पुष्पों को एकत्रित करने आया हूँ। वे पुष्प क्या हैं? वह आत्मा के पुष्प हैं जो बिखरे हुए हैं, आत्मा के सम्बन्धी हैं, मानव के हृदय को ग्राही बनाने वाले पुष्प हैं। आज मैं आध्यात्मिक वाद की गाथा गाने आया हूँ।

वेद का ऋषि कह रहा है? यह जो वेद रूपी प्रकाश है इस प्रकाश में तीन प्रकार की आभा हैं, उन तीनों प्रकार की आभाओं को एकत्रित करना, अपने में पान करना, यह हमारा कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्यवाद के क्षेत्र में आ करके हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए और इस संसार में आसक्त न होते हुए हम इस संसार से मुक्त होते हुए कर्म करते हुए चले जाएँ। यही हमारे वाक्यों का आशय है, यही विचार है। आज का हमारा वेद का ऋषि बहुत ऊँची से ऊँची उड़ान उड़ रहा है मैं तुम्हें उसका स्पष्टीकरण कराए देता हूँ। मैंने अपने उस विषय की गाथा को प्रकट किया।

ऐसा कहा जाता है कि महाराजा बलि याग करता था राजा बलि के यहाँ याग होता रहा तो देवताओं ने परमपिता परमात्मा की उपासना की–कि हे महाराज! यह जो संसार है यह महाराजा बलि के आतंक से आतंकित हो रहा है। कहते हैं कि वामन अवतार आए और वामन ने कहा कि जब तुम इतना ऊँचा याग करते हो बलि, तो तुम मुझे दक्षिणा अर्पित करो। महाराज शुक्राचार्य उनके गुरु ने कहा कि हे बलि! दक्षिणा मत देना, वचनबद्ध मत हो जाना। महाराजा बलि ने अपने गुरु की आज्ञा स्वीकार नहीं की। न करने का परिणाम यह हुआ कि बलि ने तीन वचन दिए। सबसे प्रथम वचन में उन्होंने पृथ्वी मण्डल को माप लिया और द्वितीय वचन में उन्होंने अन्तरिक्ष मण्डल को माप लिया और तृतीय में मेरे प्यारे! द्यु लोक को माप लिया। संसार में क्या रह गया? क्योंकि द्यु से जितना संसार का ब्रह्माण्डवाद है, आकाश गंगा वाद है इसमें रत्त रहती है, अन्तरिक्ष लोक में मानो वह प्रतिष्ठित रहती हैं और पृथ्वी मण्डल में वनस्पतियाँ ओत-प्रोत रहती हैं जो ज्ञान की गाथा गा रही है। बलि ने यह सोचा कि तू कहाँ जाए? जब बलि अग्रणी रूपों से रमण करने लगा तो कहा जाता है कि चतुष्पाद में इस बलि को पृथ्वी के आँगन में अर्पित कर दिया। पृथ्वी में इसको रमण कर दिया। तो देखो अन्धकार कहाँ चला जाता है? अन्धकार पृथ्वी के गर्भ में चला गया। तो वेद का ऋषि यह कहता है कि आज हम बलि की उपासना करें। वेद कहता है कि बलि नाम रात्रि का है और वामन नाम सूर्य का है। जब यह संसार रात्रि अन्धकार में रहता है तो प्रातःकाल देवता याचना करते हैं, आदित्य सूर्य वामन उदय हो जाते हैं और उदय हो करके तीन वचन ले करके तीनों पादों में संसार को नाप लेते हैं। ऊषा किरण से वह इस पृथ्वी मण्डल को नाप लेते हैं, कान्ति से अन्तरिक्ष लोकों को और कृतिक नाम की किरणों से द्यु-मण्डल को नाप लेते हैं। ये जो नाना प्रकार की ये तीनों किरणें हैं उषा, कान्ता और कृतिका इन सर्वत्र किरणों से यह संसार नापा जाता है। जब यह नाप लिया जाता है तो अन्धकार कहाँ रह गया। इसलिए मानव को विचार विनिमय करना है कि तीन आचमन करने हैं, जिससे अज्ञान रूपी अन्धकार न रहे हमारे

समक्ष। अज्ञान नहीं रहना चाहिए। क्योंकि यदि मानव के हृदय में अन्धकार रहा युक्ति युक्त विद्या न रही, वैदिक प्रकाश न रहा, आत्मिक विचार न रहा तो मानो मानव की मृत्यु हो जाएगी। उसी का नाम मृत्यु है।

शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नहीं है। मृत्यु तो अज्ञान का नाम है, अज्ञान को त्यागो। शरीर का तो स्वभाव है। यह तो उसका निर्माण होता रहेगा, विच्छेद होगा, परमाणु जो सुगठित हैं उनका विच्छेद होना है। परन्तु जो अज्ञान तुम्हारे मस्तिष्कों में अन्तःकरण में प्रतिष्ठित हो गया है वह आवागमन का मूल कारण बन करके तुम्हें आवागमन के क्षेत्र में ले जाएगा। इसलिए हे मानव ! तू तीन आचमन कर जिससे अन्तःकरण में, जिसको चित्त कहते हैं, जिसमें करोड़ों वर्षों के सँस्कार विद्यमान रहते हैं, उन सँस्कारों को समाप्त कर जिससे वेद रूपी जो प्रकाश है उससे वे जो सँस्कार हैं जो भोगों के रूप में ज्ञान के रूप में वे सब भस्म हो जाएँ। **आवागमन का क्षेत्र समाप्त हो जाएगा उसी को मुक्ति कहते हैं।**

मन और प्राण दोनों को एक सूत्र में लाना है। उसकी माला बना करके जैसे ओम् रूपी धागे में प्रत्येक ऋचा पिरोई हुई है। इसी प्रकार परमात्मा का जितना ज्ञान विज्ञान है वह परमपिता परमात्मा ओ३म् रूपी ध ागे में एक-एक कण में पिरोया हुआ है, उसमें ओत-प्रोत है। इसलिए प्रत्येक मानव को यह विचारना है कि हमें मुक्त होना है। इन्द्रियों को मुक्त करना है। इन आचमनों को जानना है।

यह है आज का वाक्य। अब मुझे समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ मैं कल प्रकट करूँगा। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए वेद की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। यह है आज का वाक्य। अब वेदों का पाठ होगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. आज हमें आन्तरिक और बाह्य हृदय को, दोनों को समन्वय कर देना चाहिये।
2. बिना गोत्र के मानव की सुन्दरता और उसकी प्रतिभा की जानकारी नहीं हो पाती।
3. हमारे आचार्यों ने एक वाक्य कहा है कि मानव को सत्यवादी बनना चाहिये।
4. गुरु वह होता है जो पक्षपात से रहित हो, तपस्वी हो, आत्मवेत्ता हो, ब्रह्म का चिन्तन करने वाला हो।
5. शङ्ख ध्वनि नाम वेदवाणी का है।
6. वेदों को हमारे यहाँ ईश्वरीय ज्ञान माना गया है।
7. हृदय ही मानव का ऐसा है जो प्रभु की चेतना से मिलान कराता है।
8. धर्म की रक्षा करने के लिये राष्ट्र का निर्माण होता है।
9. मानव अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिये, इस अन्तरात्मा को जानने के लिये इस संसार में आता है।
10. मानव शरीर को ब्रह्मपुरी स्वीकार करे और इसमें विचारों का यज्ञ करते रहे।
11. यह जगत मेरे उस प्यारे प्रभु ने सङ्कल्प मात्र से रचा है, यह केवल सङ्कल्प है प्रभु का।
12. ऊँचे संस्कारों को जन्म दो जिससे तुम्हारा जीवन सुन्दर बने।
13. पृथ्वी को रचने से पूर्व मेरे प्यारे प्रभु ने समुद्ररूपी मेखला बनायी।
14. मेखला का अभिप्रायः कि पृथ्वी जो भी विष उगला करती है, उसको निगलने वाला समुद्र कहलाता है।
15. हुत का अभिप्रायः है आहुति देना, अग्नि में आहुति देना।
16. देवताओं को अन्न प्रदान को हुत कहा जाता है।
17. बुद्धिमान को ही पुरोहित कहा जाता है।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

रक्षित भारद्वाज

श्रीमति इन्दु भारद्वाज व श्री विपिन भारद्वाज निवासी ग्राम रई, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश ने अपने प्रिय सुपुत्र रक्षित भारद्वाज के चौबीसवें जन्मदिवस, दिनाँक 7 जून, 2022 के शुभ आगमन पर प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 2100 रु. का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए उदारता से प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार व्यक्त करती है।

श्री भारद्वाज जी गुड़गाँव में सेवारत हैं और वहीं पर अपने परिवार सहित अपने जीवन को अपने कार्य के साथ-साथ वैदिक परम्परा से सम्पन्न करने में प्रयत्नशील हैं। समस्त परिवार पूज्यपाद गुरुदेव से विशेष प्रभावित है और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए यागों में अपनी आहुति प्रदान करके अपने जीवन को निरन्तर यज्ञमयी बनाने में सदैव अग्रणीय रहता है।

ऐसे श्रद्धालु एवम् याज्ञिक परिवार के द्वारा अत्यन्त श्रद्धा से निरन्तर सहयोग का समिति पुनः से आभार प्रकट करती है और उनके सौभाग्यशाली पुत्र के जन्मदिवस पर बारम्बार शुभकामनायें देते हुए समस्त परिवार के लिए सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	160.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	50.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेध-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	55.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	160.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	150.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
80.	यौगिक प्रवचन माला भाग-20	160.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, पेनड्राइव के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09897695391
2. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294, मोबाइल नं. 9810887207
3. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पञ्चशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
4. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
5. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
6. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। फोन नं. 0120-4202763, मो. नं. 9818079943
7. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
8. आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री, मं.न. 209 ग्रीन हाईटस A to Z रूड़की रोड़, मोदीपुरम्, मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09411823200
9. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पँचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
10. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
12. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
13. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
14. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
15. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्रीमति रेणु तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्री रत्न तुली	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुमन त्यागी, मुम्बई	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है कि मासिक सहयोग की राशि समय पर प्रेषित करने का सहयोग करें जिससे प्रकाशन निरन्तर ऊर्ध्वागति को प्राप्त होता रहें। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए, यज्ञशाला में परणित होते हुए अपने विचारों का यज्ञ करते चले जाएँ। नाना प्रकार के सङ्कल्प के साथ में हमारा एक मानसिक सङ्कल्प हो, प्राण का ही उसमें निदान हो, उसके पश्चात् जब हम उसमें आहुति देते हैं तो वह आहुति द्यौ लोक को प्राप्त होती है। देवतागण उसको प्राप्त करते हैं और देवता जब तृप्त होते हैं तो राष्ट्रवाद को क्या, समाज को पवित्र बनाते चले जाते हैं। परमाणुवाद को ऊँचा बनाते चले जाते हैं। क्योंकि यह जितना जगत है यह सब परमाणुओं की ही रचना है। द्यौ लोक का जो घृत है उसमें कितने सूक्ष्म परमाणु होते हैं, और वह परमाणु जब अग्नि-उद्‌गाता बन करके और वायु अध्वर्यु बन करके जब उसका साकल्य उसमें प्रदान किया जाता है तो द्यौ लोक में कितनी महान् गति होती है, कितना मानव का हृदय स्वच्छ और पवित्र होता है, ममता से रहित होता है, नाना प्रकार की विडम्बनाओं से रहित होता है उतना ही द्यौ लोक को मानव का सङ्कलन प्राप्त होता चला जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 50 : अंक : 589
जुलाई 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2022-2023
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-7-2022
Published on 5th day of the same month

वर्ष 50 : अंक : 589
जुलाई 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2022-2023
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-7-2022
Published on 5th day of the same month